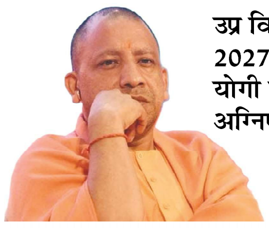

उप्र विस चुनाव 2027 : योगी सरकार की अग्निपरीक्षा 5

ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ
সাপ্তাহিক
জন জন বিচাৰ

जन जन की बात जन जन तक
साप्ताहिक
जन जन विचार
WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER
Language : Hindi, Assamese & English
WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL
WEEKLY
JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 24 July 2026 :: Year-1 Vol-28 Issue-7 ::शुक्रवार। 24 जुलाई 2026। शक संवत 1948। आषाढ़। शुक्ल। दशमी। :: पृष्ठ-20। मूल्य - 15 रुपए

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

लाठी भी गलत नारे भी सही नहीं!

लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि वह असहमति को स्थान देता है। लेकिन लोकतंत्र की सबसे बड़ी त्रासदी तब शुरू होती है, जब असहमति अराजकता में और राजनीति घृणा में बदल जाती है। दिल्ली का 'चलो संसद' आंदोलन आज इसी दोराहे पर खड़ा दिखाई देता है।

यदि यह आंदोलन युवाओं के भविष्य, शिक्षा व्यवस्था में सुधार और जवाबदेही की लड़ाई था, तो फिर इसकी पहचान विवादित नारों से क्यों बनी? 'मर गया मोदी', 'मर गया शाह', 'कश्मीर भारत का हिस्सा नहीं है', 'सीता के पति...', 'भारत को नेपाल बना देंगे' जैसे नारे और कटाक्ष क्या भारत के युवाओं के सपनों का प्रतिनिधित्व करते हैं? क्या प्रधानमंत्री की आलोचना और शेष पृष्ठ 2 पर

लाठी की चोट और मौन की राजनीति

सीजेपी आंदोलन : लोकतंत्र, नेतृत्व व राष्ट्र चेतना से जुड़े असहज सवाल

जन जन विचार
...नई दिल्ली

दिल्ली की सड़कों पर युवा थे, हाथों में तख्तियां थीं, नारे थे, पुलिस के बैरिकेड थे, लाठीचार्ज था और अंततः सत्ता तथा विपक्ष के राजनीतिक बयान थे। लेकिन इन सबके बीच सबसे बड़ा सवाल कहीं पीछे छूट गया– क्या यह आंदोलन युवाओं के भविष्य की लड़ाई था या फिर वह एक बड़े राजनीतिक और वैचारिक संघर्ष का मंच बन गया?

संसद के मानसून सत्र के पहले दिन आयोजित 'चलो संसद' मार्च को लेकर दिल्ली में अभूतपूर्व सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। पुलिस ने प्रतिबंधात्मक आदेश लागू किए थे, लेकिन शेष पृष्ठ 5 पर

छात्रों के बहाने पीएम आवास पर कांग्रेस का प्रदर्शन

सरकार ने बताया-'खतरनाक मिसाल'

नई दिल्ली। संसद परिसर और छात्रों से जुड़े मुद्दों को लेकर जारी राजनीतिक टकराव 21 जुलाई को उस समय और तेज हो गया जब कांग्रेस नेताओं ने प्रधानमंत्री आवास 7, लोक कल्याण मार्ग के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। इस घटनाक्रम पर सरकार ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए इसे सुरक्षा के लिहाज़ से गंभीर और लोकतांत्रिक परंपराओं के विपरीत बताया।

सरकारी सूत्रों के अनुसार प्रधानमंत्री के आधिकारिक आवास के बाहर इस प्रकार का प्रदर्शन 'परिपक्व लोकतंत्रों में नहीं देखा जाता'। सूत्रों ने कहा कि राजनीतिक नेताओं के निजी या आधिकारिक आवासों को विरोध का केंद्र बनाना एक 'गलत और खतरनाक मिसाल' है, जिससे सुरक्षा व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। साथ ही राजनीतिक दलों से संयम बरतने की अपील करते हुए पड़ोसी देशों के उदाहरणों का उल्लेख किया गया, जहां नेताओं के आवासों को शेष पृष्ठ 7 पर

सीजेपी ने विजेता दहिया को प्रवक्ता पद से हटाया

नई दिल्ली। कॉक्रोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने अपने प्रवक्ता विजेता दहिया को उनके पद से हटा दिया है और तमाम संगठनात्मक जिम्मेदारियां उनसे ले ली हैं। पार्टी ने एक्स पर पोस्ट कर जानकारी दी है कि, 'हम अपने प्रवक्ता विजेता दहिया के उस असंवेदनशील आचरण की कड़ी निंदा करते हैं, जिसके वीडियो उस समय सामने आए जब शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारी और हमारी टीम पुलिस की बर्बर कार्रवाई का सामना कर रही थी। ऐसा व्यवहार पूरी तरह अस्वीकार्य है। यह न केवल गंभीर निर्णयहीनता को दर्शाता है, बल्कि हमारे आंदोलन के मूल्यों, सिद्धांतों और उद्देश्य के भी पूर्णतः विपरीत है। इसलिए तत्काल प्रभाव से विजेता दहिया को कॉक्रोच जनता पार्टी के प्रवक्ता पद से हटाया जाता है तथा उन्हें उनकी सभी आधिकारिक जिम्मेदारियों से मुक्त किया जाता है।'

अरुणाचल : रस्सी से उल्टा लटककर महिलाएं पार कर रहीं उफनती नदी

अंजाव। अरुणाचल प्रदेश के अंजाव जिले से सामने आए एक वायरल वीडियो ने सीमावर्ती और दुर्गम क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की गंभीर कमी को उजागर कर दिया है। वीडियो में कई महिलाएं पीठ पर टोकरी लादे, स्वयं को रस्सी से बांधकर स्टील के तार पर उल्टा लटकते हुए उफनती

नदी पार करती दिखाई दे रही हैं। सुरक्षित पुल के अभाव में रोजमर्रा की जरूरतों के लिए इस जोखिम भरे तरीके का सहारा लेने को वे मजबूर हैं।

रिपोर्टों के अनुसार, यह घटना अंजाव जिले के एक दूरस्थ गांव की है, जहां नदी पार करने के लिए स्थायी शेष पृष्ठ 7 पर

धन दिशा

टर्म इंश्योरेंस कोई विकल्प नहीं

पिछले हफ्तों में हमने एसआईपी की बात की-पैसा कैसे बढ़ता है, और जल्दी शुरू करने का फायदा क्या होता है। इस हफ्ते बात करते हैं उस चीज की, जो सबसे पहले होनी चाहिए- 'परिवार की सुरक्षा'।

एक परिचित दुकानदार की बात याद आती है। उम्र 42 साल, सेहत ठीक, छोटा लेकिन स्थिर व्यापार, पत्नी और दो बच्चों की जिम्मेदारी। जब पूछा कि क्या लाइफ इंश्योरेंस है, तो हंसकर बोले, 'मुझे कुछ नहीं होगा, पैसे क्यों बर्बाद करूं?'

'मुझे कुछ नहीं होगा', पर्सनल फाइनेंस की दुनिया में सबसे खतरनाक वाक्य।

सच यह है- इंश्योरेंस आपके लिए नहीं है। यह उन लोगों के लिए है जो आपके न रहने पर पीछे रह जाएंगे। लाइफ इंश्योरेंस उन गिनी-चुनी चीजों में से है जो ठीक उस वक्त काम आती है, जब परिवार को सबसे ज्यादा जरूरत होती है।

टर्म इंश्योरेंस बनाम दूसरे प्लान - सीधी बात

बहुत से एजेंट 'इंश्योरेंस के साथ इन्वेस्टमेंट' वाली पॉलिसी बेचने की कोशिश करते हैं। ज्यादातर परिवारों के लिए यह सही क्रम नहीं है। सबसे सरल और किफायती सुरक्षा है - सिर्फ टर्म इंश्योरेंस। इंश्योरेंस और निवेश को हमेशा अलग-अलग रखें।

बात सीधी है-टर्म प्लान कम प्रीमियम में बड़ा कवर देता है, क्योंकि अवधि पूरी होने पर यह कुछ वापस नहीं करता। निवेश के लिए अलग से (एसआईपी के जरिए) पैसा लगाएं।

कितना कवर चाहिए?

एक आसान और भरोसेमंद नियम-अपनी सालाना कमाई का 10 से 15 गुना। यानी अगर आप साल में 6 लाख रुपए कमाते हैं, तो 60 से 90 लाख रुपए का कवर एक अच्छी शुरुआत है। इतना कि आपकी गैरमौजूदगी में भी परिवार घर का खर्च, बच्चों की पढ़ाई और कोई भी कर्ज संभाल सके।

इंश्योरेंस डर की निशानी नहीं, यह उन लोगों के लिए पहले से सोचने की निशानी है जिनसे आप प्यार करते हैं।

अगले हफ्ते : बेटी के भविष्य के लिए सरकार की एक खास योजना, जो हर माता-पिता को जाननी चाहिए।

इस कॉलम के लिए आपका कोई सवाल है? हमें भेजिए-

-कोमल जैन
पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट, संस्थापक, वेल्थप्लायर्स- मो. 9004510577

सिक्किम का बड़ा शिक्षा अभियान

2,000 से अधिक विद्यार्थियों को मिलेगी जेईई-नीट की नि:शुल्क कोचिंग

जन जन विचार
...✍ गंगटोक

प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए सिक्किम सरकार ने एक महत्वाकांक्षी पहल की है। मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने राज्यव्यापी 'सीएम-साथी' कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए घोषणा की कि अब 2,000 से अधिक विद्यार्थियों को जेईई और नीट जैसी राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं की नि:शुल्क एवं उच्च गुणवत्ता वाली कोचिंग उपलब्ध कराई जाएगी।

भारत सरकार की 'साथी' (सेल्फ असेसमेंट टेस्ट एंड हेल्प फॉर एंट्रेंस एग्जाम्स) पहल के सहयोग से शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण कोचिंग उपलब्ध कराकर प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफलता के समान अवसर प्रदान करना है।

मुख्यमंत्री तमांग ने कहा कि किसी भी विद्यार्थी का भविष्य केवल आर्थिक अभाव के कारण प्रभावित नहीं होना चाहिए। 'सीएम-साथी' योजना के माध्यम से राज्य के सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों तक विश्वस्तरीय अध्ययन सामग्री, विशेषज्ञों के वीडियो व्याख्यान, अभ्यास प्रश्न, मॉडल परीक्षा, शंकाओं के समाधान तथा आधुनिक डिजिटल शिक्षण संसाधन पहुंचाए जाएंगे। राज्य सरकार के अनुसार, इस योजना का लाभ 40 से अधिक सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को मिलेगा। साथ ही, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर के सहयोग से विज्ञान और गणित के शिक्षकों को भी विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा, ताकि वे विद्यार्थियों का बेहतर मार्गदर्शन कर सकें।

चारा घोटाला : लालू यादव को सुप्रीम राहत

नई दिल्ली। चारा घोटाला मामले में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल प्रमुख लालू प्रसाद यादव को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। सर्वोच्च अदालत ने देवघर कोषागार मामले में उनकी जमानत रद्द करने की केंद्रीय जांच ब्यूरो की याचिका को खारिज करते हुए झारखंड हाई कोर्ट के आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया। जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस पीबी वराले की पीठ ने सुनवाई के दौरान कहा कि जमानत आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर अब हस्तक्षेप करना उचित नहीं होगा, क्योंकि मामला करीब सात वर्षों से लंबित है। अदालत ने हालांकि झारखंड हाई कोर्ट को निर्देश दिया कि वह लालू यादव की लंबित अपील पर तेजी से सुनवाई पूरी करे।

राशिफल

24 से 30 जुलाई 2026 ।। विक्रम संवत 2083-**मास :** आषाढ़, **पक्ष :** शुक्ल, **तिथि :** दशमी

मेष : यह सप्ताह आत्मविश्वास और नई शुरुआत का है। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों को सराहना मिलेगी। रुके हुए कार्य गति पकड़ेंगे। आर्थिक मामलों में सोच-समझकर निवेश करें। परिवार में किसी शुभ समाचार से प्रसन्नता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

वृषभ : धैर्य ही आपकी सबसे बड़ी शक्ति होगी। नौकरी में अतिरिक्त जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य की दृष्टि से खान-पान का विशेष ध्यान रखें। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

मिथुन : नई योजनाओं पर कार्य आरंभ करने के लिए समय उत्तम है। मित्रों और सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के संकेत हैं। यात्रा लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

कर्क : भावनाओं पर नियंत्रण रखें और जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें। आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी। परिवार में सामंजस्य बना रहेगा। नौकरीपेशा लोगों को पदोन्नति अथवा सम्मान मिलने की संभावना है।

सिंह : आपका नेतृत्व कौशल इस सप्ताह आपको आगे बढ़ाएगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यापारियों को नए अवसर प्राप्त होंगे। सप्ताह के मध्य में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मुलाकात लाभदायक सिद्ध होगी।

कन्या : योजनाबद्ध तरीके से कार्य करेंगे तो सफलता मिलेगी। आर्थिक लाभ के योग हैं। किसी पुराने मित्र से मुलाकात संभव है। विद्यार्थियों को मेहनत के अनुरूप परिणाम प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

तुला : यह सप्ताह संतुलन बनाए रखने का है। कार्यक्षेत्र में आपके निर्णयों की प्रशंसा होगी। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। नई साझेदारी करने से पहले सभी पहलुओं की जांच अवश्य करें।

वृश्चिक : आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। रुका हुआ धन प्राप्त होने के संकेत हैं। धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धनु : नई संभावनाओं के द्वार खुलेंगे। नौकरी में परिवर्तन की सोच रहे हैं तो सकारात्मक समाचार मिल सकता है। परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा। लंबी यात्रा की योजना बन सकती है।

मकर : परिश्रम का उचित फल प्राप्त होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। संपत्ति से जुड़े मामलों में लाभ मिलने की संभावना है। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। मानसिक तनाव को योग और ध्यान से दूर करें।

कुंभ : रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नए लोगों से संपर्क भविष्य में लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं। विद्यार्थियों को एकाग्रता बनाए रखने की आवश्यकता है।

मीन : यह सप्ताह आत्ममंथन और उन्नति का है। आर्थिक मामलों में सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। आध्यात्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ सकती है।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

24 जुलाई (शुक्रवार) : गिरिजा पूजा
25 जुलाई (शनिवार) : श्री विष्णुशयनी एकादशी व्रत
28 जुलाई (मंगलवार) : चौमासी चौदस (जैन)
29 जुलाई (बुधवार) : गुरु पूर्णिमा
30 जुलाई (गुरुवार) : श्रावण मास प्रारंभ

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

पृष्ठ 1 का शेषांश...

लाठी भी गलत...

प्रधानमंत्री के प्रति घृणा का प्रदर्शन एक ही बात है? क्या राष्ट्र की एकता पर प्रश्नचिह्न लगाकर शिक्षा की लड़ाई लड़ी जा सकती है?

इस देश ने सत्ता के विरुद्ध बड़े-बड़े जन आंदोलन देखे हैं। सत्ता बदली है, नीतियां बदली हैं, लेकिन भारत कभी नहीं बदला। इसलिए जो लोग भारत और उसके संविधान से ऊपर अपनी विचारधारा को रखते हैं, उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि इस देश में सरकारें अस्थायी हैं, लेकिन राष्ट्र सर्वोपरि है।

उतना ही बड़ा प्रश्न सत्ता से भी है। क्या लोकतंत्र में हर असहमति का उत्तर लाठी होगी? क्या युवाओं की आवाज पहले आंसू गैस और फिर वार्ता की पात्र बनेगी? यदि सरकार को राष्ट्र की चिंता है तो उसे राष्ट्र के युवाओं की भी चिंता करनी होगी। लोकतंत्र में संवाद कमजोरी नहीं, बल्कि सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति होती है।

लेकिन इस पूरे घटनाक्रम का सबसे दुखद पक्ष यह है कि युवाओं के वास्तविक प्रश्न एक बार फिर राजनीति की बलि चढ़ गए। शिक्षा व्यवस्था, रोजगार और पारदर्शिता जैसे प्रश्न कहीं पीछे छूट गए और सुर्खियां बन गए विवादित नारे, लाठीचार्ज और राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप।

आंदोलन के नेतृत्व को आत्ममंथन करना होगा। यदि वह स्वयं अमर्यादित भाषा का प्रयोग करेगा, तो वह युवाओं को लोकतंत्र नहीं, बल्कि वैचारिक कट्टरता का पाठ पढ़ाएगा। दूसरी ओर, सरकार को भी यह समझना होगा कि बैरिकेड लोकतंत्र की स्थायी भाषा नहीं हो सकते।

भारत के युवाओं को किसी राजनीतिक दल की सेना नहीं, बल्कि भारत के संविधान का प्रहरी बनना होगा। उन्हें सत्ता से प्रश्न पूछने चाहिए, लेकिन राष्ट्र से नहीं। उन्हें सरकारों को कठघरे में खड़ा करना चाहिए, लेकिन भारत माता को नहीं। उन्हें प्रधानमंत्री की आलोचना करनी चाहिए, लेकिन लोकतांत्रिक मर्यादा का परित्याग नहीं करना चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की नहीं है कि कौन जीता और कौन हारा। आवश्यकता इस बात की है कि लोकतंत्र जीते, संविधान जीते और भारत जीते। याद रखिए, प्रश्न पूछने का अधिकार लोकतंत्र देता है, लेकिन प्रश्न पूछने की मर्यादा ही लोकतंत्र को महान बनाती है।

नाजिरा में बाढ़ का कहर, मुख्यमंत्री ने संभाला मोर्चा

जन जन विचार
...✍ नयनमणि फुकन
नाजिरा

शिवसागर जिले के नाजिरा उपमंडल में दिखौ नदी की विनाशकारी बाढ़ ने अभूतपूर्व तबाही मचाई है। अब तक 18 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि करीब 60 लोग अभी भी लापता बताए जा रहे हैं। सबसे अधिक प्रभावित बिहूबर, रमनी और रोहदई पंचायत हैं, जहां हजारों परिवार बेघर हो गए हैं और जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने नाजिरा का दौरा किया। उनके साथ राज्य के मंत्री सुशांत बुढ़ागोहाई तथा स्थानीय विधायक मयूर बरगोहाईं भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने बिहूबर क्षेत्र के राहत शिविर में पहुंचकर पीड़ित परिवारों से मुलाकात की, उनकी समस्याएं सुनीं और भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार इस कठिन समय में उनके साथ पूरी मजबूती से खड़ी है। उन्होंने कहा कि राहत एवं बचाव अभियान लगातार जारी है और वह स्वयं स्थिति की निगरानी कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने शीघ्र दोबारा क्षेत्र का दौरा करने का भी आश्वासन दिया।

गौरतलब है कि 19 जुलाई को दिखौ नदी के जलस्तर में अचानक आई अभूतपूर्व वृद्धि ने नाजिरा को चारों ओर से जलमग्न कर दिया। लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने तक का अवसर नहीं मिला। विशेष रूप से बिहूबर के नेपाली खूंटी क्षेत्र में भारी तबाही हुई, जहां बड़ी संख्या में पशुपालकों के मवेशी बाढ़ की चपेट में आ गए। अनेक गांवों में अब भी पानी भरा है, जबकि जिन क्षेत्रों से पानी उतर चुका है वहां घरों में जमी मोटी गाद लोगों के सामने नई चुनौती बन गई है।

दूसरी ओर, प्रभावित परिवारों ने नाजिरा उपमंडल प्रशासन तथा नाजिरा एवं सिमलगुड़ी नगर पालिकाओं की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि कई राहत शिविरों और गांवों में अब भी स्वच्छ पेयजल, खाद्य सामग्री और आवश्यक राहत पर्याप्त मात्रा में नहीं पहुंच सकी है।

मुख्यमंत्री के दौरे से पीड़ितों में नई उम्मीद जगी है, लेकिन अब सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या प्रशासन और संबंधित एजेंसियां राहत एवं पुनर्वास कार्य में अपेक्षित गति और संवेदनशीलता दिखा पाएंगी। नाजिरा आज केवल प्राकृतिक आपदा ही नहीं, बल्कि प्रभावी राहत व्यवस्था की भी कठिन परीक्षा बन गया है।

मेघालय में विकास को नई रफ्तार, मुख्यमंत्री ने शुरू किया पहला ब्लॉक स्तरीय 'सीएम कनेक्ट केंद्र'

जन जन विचार
...✍ शिलांग

मेघालय सरकार ने ग्रामीण विकास और जनसुनवाई व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए राज्य का पहला ब्लॉक स्तरीय 'सीएम कनेक्ट केंद्र' शुरू किया है। मुख्यमंत्री कॉनराड के. संगमा ने सोहियोंग में आयोजित कार्यक्रम के दौरान इस केंद्र का शुभारंभ करने के साथ ही 140 करोड़ रुपए से अधिक की विकास परियोजनाओं की घोषणा और शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब लोगों को अपनी समस्याओं और शिकायतों के समाधान के लिए जिला मुख्यालय या उच्च कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। ब्लॉक स्तर पर स्थापित 'सीएम कनेक्ट केंद्र' के माध्यम से नागरिक अपने आवेदन और शिकायतें सीधे दर्ज करा सकेंगे। केंद्र का उद्घाटन सेवानिवृत्त सैनिक पिंटेंगनलांग नोंगरांग से कराया गया, जबकि मुख्यमंत्री ने स्वयं इस केंद्र में पहली जन-शिकायत दर्ज कर नई व्यवस्था की शुरुआत की।

पर्यटन क्षेत्र को सबसे बड़ी सौगात

घोषित परियोजनाओं में सबसे बड़ा हिस्सा पर्यटन क्षेत्र को मिला है। लगभग 83.20 करोड़ रुपए की लागत से सोहियोंग और किनरोह व्यू प्वाइंट, नोंगकासेन में ट्री हाउस एवं एम्फीथिएटर, लिंगवा जलप्रपात का विकास तथा लुम डिएंगिएई में प्रीमियम होटल और दर्शक स्थल विकसित किए जाएंगे।

सड़क और पेयजल परियोजनाओं पर विशेष जोर

सरकार ने 20.58 करोड़ रुपए की लागत से नई सड़कों और पुलों के निर्माण की घोषणा की। इसके अलावा 34.53 करोड़ रुपए की 'ग्रेटर सोहियोंग जलापूर्ति योजना' तथा बाढ़ सिंचाई परियोजना की आधारशिला भी रखी गई, जिससे क्षेत्र में लंबे समय से चली आ रही पेयजल समस्या के समाधान की उम्मीद बढ़ी है।

गांवों में डिजिटल सुविधाएं और कृषि को बढ़ावा

योजना के तहत 13 गांवों में डिजिटल सुविधाएं, बाल पुस्तकालय, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र, सामूहिक कृषि विपणन केंद्र तथा किसानों के लिए परिवहन वाहन उपलब्ध कराए जाएंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में कोल्ड स्टोरेज और सौर ऊर्जा आधारित भंडारण सुविधाओं के निर्माण की भी घोषणा की गई।

शिक्षा और रोजगार पर भी विशेष ध्यान

मुख्यमंत्री ने बताया कि 'मिशन एजुकेशन' के तहत सोहियोंग में छह नए विद्यालय भवन तैयार हो चुके हैं और चौथे चरण के कार्य शीघ्र शुरू होंगे। विद्यालयों के उन्नयन, शिक्षकों की नियुक्ति तथा स्मार्ट कक्षाओं की स्थापना की दिशा में भी सरकार कार्य कर रही है।

स्वयं सहायता समूहों को आर्थिक सहायता

कार्यक्रम के दौरान स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों तथा क्लस्टर स्तरीय महासंघों को चार करोड़ रुपए से अधिक की वित्तीय सहायता स्वीकृत की गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना, रोजगार के अवसर बढ़ाना और विकास की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना है।

विदेशी घोषित पांच महिलाओं को सुप्रीम राहत

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

असम में विदेशी घोषित की गई पांच महिलाओं के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार को दो सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। महिलाओं ने विदेशी न्यायाधिकरण और गौहाटी उच्च न्यायालय के उन आदेशों को चुनौती दी है, जिनमें उन्हें बांग्लादेशी नागरिक बताते हुए विदेशी घोषित किया गया था।

न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता की पीठ ने राज्य सरकार की ओर से जवाबी हलफनामा दाखिल करने के लिए समय मांगे जाने पर यह निर्देश दिया। इससे पहले, 5 जून को शीर्ष अदालत ने महिलाओं के निर्वासन पर यथास्थिति बनाए रखने का आदेश देते हुए उन्हें अंतरिम राहत प्रदान की थी।

पांच महिलाओं में से दो वर्तमान में हिरासत केंद्र (डिटेंशन सेंटर) में हैं। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि उनकी नागरिकता का निर्धारण निष्पक्ष और विधिसम्मत प्रक्रिया के तहत नहीं किया गया।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं के वकीलों ने सुप्रीम कोर्ट के 13 जुलाई के हालिया फैसले का हवाला देते हुए कहा कि नागरिकता संबंधी मामलों में प्रत्येक व्यक्ति को निष्पक्ष, वैध और तार्किक प्रक्रिया का अधिकार है। अदालत ने भी पूर्व में स्पष्ट किया है कि अवैध प्रवास की रोकथाम राज्य का अधिकार

है, लेकिन नागरिकता निर्धारण पूरी तरह न्यायसंगत प्रक्रिया से ही होना चाहिए।

यह मामला अब दो सप्ताह बाद फिर सुनवाई के लिए सूचीबद्ध होगा। इस बीच, अदालत का अंतरिम संरक्षण जारी रहेगा। यह मामला असम में नागरिकता और विदेशी न्यायाधिकरणों से जुड़े मामलों के बीच महत्वपूर्ण कानूनी और मानवीय महत्व रखता है।

संपादकीय

गाली और अश्लीलता

सुप्रीम कोर्ट का हालिया निर्णय केवल एक कानूनी व्याख्या नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति, सामाजिक मर्यादा और न्याय के बीच संतुलन स्थापित करने वाला महत्वपूर्ण फैसला है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि गाली-गलौज, अभद्र या अपमानजनक भाषा अपने आप में 'अश्लीलता' नहीं मानी जा सकती। अश्लीलता वही है, जिसमें कामुकता, वासना भड़काने या नैतिक पतन की प्रवृत्ति हो। यह स्पष्टता कानून के सही और विवेकपूर्ण प्रयोग के लिए आवश्यक है।

यह निर्णय इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि कई बार सामान्य विवादों या व्यक्तिगत रंजिशों में अश्लीलता की धाराओं का अनावश्यक उपयोग कर आपराधिक मुकदमे दर्ज करा दिए जाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने यह संदेश दिया है कि कानून का प्रयोग भावनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि विधिक मानकों के अनुरूप होना चाहिए।

हालांकि, इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि गाली-गलौज या अपमानजनक भाषा को सामाजिक स्वीकृति मिल गई है। सभ्य समाज में संवाद की मर्यादा, परस्पर सम्मान और शालीन व्यवहार लोकतांत्रिक संस्कृति की आधारशिला हैं। कानूनी रूप से कोई शब्द अश्लील न हो, फिर भी वह सामाजिक दृष्टि से अनुचित और निंदनीय हो सकता है।

यह फैसला न्यायपालिका की उस संवेदनशील सोच को दर्शाता है, जो कानून की सीमाओं और सामाजिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है। नागरिकों की जिम्मेदारी भी है कि वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग संयम, शिष्टाचार और उत्तरदायित्व के साथ करें।

फेमिनिज्म का सही अर्थ

फेमिनिज्म (नारीवाद) को लेकर समाज में अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं। अक्सर इसे पुरुष-विरोध या पुरुषों से नफरत की विचारधारा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जबकि इसका वास्तविक उद्देश्य महिलाओं और पुरुषों के बीच समान अधिकार, समान अवसर और समान सम्मान सुनिश्चित करना है। नारीवाद किसी एक वर्ग को श्रेष्ठ बनाने का नहीं, बल्कि समाज में लैंगिक असमानताओं को दूर करने का प्रयास है। इतिहास गवाह है कि महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति, मतदान, रोजगार और निर्णय लेने के अधिकार के लिए लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा। इसी संघर्ष से नारीवाद की विभिन्न धाराएं विकसित हुईं। समय के साथ इसका स्वरूप भी बदला और आज यह समान वेतन, कार्यस्थल पर सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सम्मानजनक जीवन जैसे व्यापक मुद्दों को समेटे हुए है।

हालांकि, सोशल मीडिया के दौर में कुछ अतिवादी विचारों या व्यक्तिगत बयानों को पूरे नारीवाद का चेहरा मान लिया जाता है। इससे समाज में गलत संदेश जाता है और वास्तविक उद्देश्य पीछे छूट जाता है। किसी व्यक्ति का पुरुष-विरोधी दृष्टिकोण नारीवाद का प्रतिनिधित्व नहीं करता। उसी प्रकार महिलाओं के अधिकारों की मांग को पुरुषों के अधिकारों के खिलाफ खड़ा करना भी उचित नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि फेमिनिज्म को पूर्वाग्रहों से नहीं, बल्कि उसके मूल सिद्धांत-समानता, न्याय और सम्मान-के आधार पर समझा जाए। एक स्वस्थ समाज वही है, जहां महिलाओं और पुरुषों दोनों को अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें। नारीवाद का सार टकराव नहीं, बल्कि समान भागीदारी और संतुलित सामाजिक विकास है। यही सोच एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी भारत की नींव रख सकती है।

विपक्ष का कुचक्र

जन जन विचार
...✍ कमलेश पांडे

कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का 'संसद चलो' आह्वान केवल एक विरोध मार्च नहीं, बल्कि केंद्र सरकार पर दबाव बनाने की एक राजनीतिक रणनीति है। खासकर जिस तरह से इस आंदोलन को छात्र आंदोलन का स्वरूप दिलवाया जा चुका है, वह डीप स्टेट के इशारे पर बनी विपक्ष की शातिर सरकार घेरो रणनीति का कमाल भी करार दिया जा रहा है। देखा जाए तो संसद के मानसून सत्र के दौरान गत 20 जुलाई को जंतर-मंतर से संसद की ओर मार्च करने के दौरान बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी जुटे और कूच किया, वह बिल्कुल संगठित राजनीतिक आंदोलन के तर्ज पर हुआ।

मजे की बात तो यह कि संसद के निकट पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच जो पूर्व प्रायोजित झड़प हुई और उसके बाद हालात नियंत्रित करने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज और आंसू गैस का इस्तेमाल किया, इससे यह संसद मार्च राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सुर्खियां बन गया। बड़े-बड़े न्यूज चैनल्स और अखबारों के दफ्तरों में इससे जुड़े कई नीतिगत सवालों पर भी बहस होने लगी। सोशल मीडिया पर जहां सरकार विरोधी भड़काऊ वीडियो वायरल होने लगे, वहीं सत्ताधारी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भी आंदोलनकारियों की कारगुजारियों के वीडियो साझा कर दिए, जिससे लोगों की सहानुभूति पुलिस और सरकार के साथ बनी रही।

यदि संसद मार्च के घटनाक्रमों पर संतुलित नजर डालें तो यही प्रतीत होता है कि जब बड़ी संख्या में सीजेपी समर्थक 'संसद चलो' मार्च के लिए जंतर-मंतर से संसद की ओर बढ़े, तो भले ही उनकी मुख्य मांगें शिक्षा सुधार, परीक्षा-पत्र लीक और जवाबदेही था, लेकिन इरादे तोड़-फोड़ वाले और खतरनाक थे, अन्यथा पुलिस को बल प्रयोग नहीं करना पड़ता। चूंकि संसद के मानसून सत्र के दौरान माननीयों की सुरक्षा के दृष्टिगत दिल्ली पुलिस ने व्यापक बैरिकेडिंग की थी, इसलिए ज्यादा दिक्कत नहीं हुई। पुलिस ने कुछ प्रदर्शनकारियों को रोका, हिरासत में लिया तथा कुछ स्थानों पर आंदोलनकारियों द्वारा उपद्रव करने के बाद आंसू गैस और बल प्रयोग की घटनाएं सामने आईं। इससे अफरा-तफरी मच गई।

देखा जाए तो इस आंदोलन की प्रमुख मांगों में नीट पेपर लीक और भर्ती प्रक्रियाओं में कथित अनियमितताओं पर कार्रवाई, बेरोजगारी के मुद्दे पर सरकार की जवाबदेही, कुछ नेताओं द्वारा केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग, आंदोलन से जुड़े लोगों के साथ संवाद आदि हैं, लेकिन जो उत्पात दिखाई-सुनाई दिया, वह विपक्षी संस्कार नहीं तो क्या है? फिर भी, केंद्र सरकार ने आंदोलन के प्रतिनिधियों से बातचीत की पहल भी की, जो टकराव के बीच संवाद की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना जा सकता है। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सरकारी प्रतिनिधि के तौर पर सीजेपी प्रतिनिधिमंडल से बातचीत की और मांगपत्र ग्रहण किया। बावजूद इसके आंदोलनकारी अपनी मांगों पर कायम हैं।

सवाल है कि संसद मार्च के क्रम में जो कुछ गड़बड़ हुआ, क्या वह लोकतांत्रिक है, सही था या गलत? तो जवाब होगा कि युवाओं का शिक्षा व्यवस्था और परीक्षा की निष्पक्षता जैसे मुद्दों पर शांतिपूर्ण तरीके से अपनी आवाज उठाना लोकतंत्र का वैध हिस्सा है। वहीं, सरकार द्वारा आंदोलनकारियों से बातचीत शुरू करना भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के अनुरूप कदम है। फिर भी संसद मार्च के दौरान आंदोलनकारियों की ओर से कुछ कुछ गलत हुआ जो अनुचित लगा। यदि प्रदर्शनकारियों ने निषिद्ध क्षेत्र में जबरन प्रवेश करने या बैरिकेड तोड़ने की कोशिश की, तो वह कानून-व्यवस्था की दृष्टि से उचित नहीं माना जाएगा।

वहीं, यदि पुलिस ने आवश्यकता से अधिक बल प्रयोग किया या शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर अनावश्यक कार्रवाई हुई, तो उसकी भी निष्पक्ष जांच और जवाबदेही तय होनी चाहिए। हालांकि, इस पर अलग-अलग पक्षों के अपने अपने दावे हैं और सभी तथ्यों के गोलमोल जवाब ही मिले हैं, जिनपर एतबार करना मुश्किल है क्योंकि सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो, जिसका अंतिम सत्यापन अभी होना बाकी है, कई अनकही कहानियां गढ़ रहे हैं। इससे सरकार सांसत में है और विपक्ष तरह-तरह के आरोप लगाकर सिस्टम की मुश्किलें बढ़ा रहा है। हालांकि इस बात में कोई दो राय नहीं कि लोकतांत्रिक समाधान का सर्वोत्तम रास्ता संवाद और कानून के दायरे में रहकर समस्या का समाधान है।

भले ही किसी भी लोकतंत्र में शांतिपूर्ण प्रदर्शन और अपनी मांगें रखना नागरिकों का अधिकार है, लेकिन इस संसद मार्च के क्रम में देश की राजधानी नई दिल्ली के हृदय स्थल पर, जिस प्रकार की हिंसा, तोड़फोड़, सार्वजनिक व निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचाना या सुरक्षा बलों से टकराव की जो प्रवृति दिखाई दी, वह विपक्षी दलों का परोक्ष कुचक्र नहीं तो क्या है? आखिर इस देशद्रोही प्रवृति को कदापि उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

इसी प्रकार, यदि पुलिस बल का प्रयोग आवश्यकता से अधिक हुआ हो, तो उसकी भी निष्पक्ष समीक्षा होनी चाहिए। सवाल है कि क्या स्थानीय जिलाधिकारी और डीसीपी के पास छात्र समूह को काबू में रखने की कोई स्पष्ट रणनीति नहीं थी? और यदि थी तो फिर इतना सबकुछ कैसे हुआ? वहीं कोई पुलिस कर्मी कैसे पिट गया और घायल हुआ? आखिर किसी दुकानदार को तोड़-फोड़ का सामना क्यों और कैसे करना पड़ा? जनपथ बाजार की सुरक्षा के व्यापक बंदोबस्त क्यों नहीं किए गए थे। वहीं, अनियंत्रित युवा भीड़ क्यों जुटने दी गई और उनको काबू में रखने के लिए व्यापक बंदोबस्त क्यों नहीं किए गए थे?

यही वजह है कि राजनीतिक दृष्टि से इसके कई मायने निकाले जा रहे हैं- पहला, संसद के मानसून सत्र के पहले दिन दबाव की राजनीति। दूसरा, युवाओं और प्रतियोगी परीक्षा अभ्यर्थियों के असंतोष को राष्ट्रीय मुद्दा बनाने का प्रयास। तीसरा, विपक्ष के लिए सरकार को घेरने का अवसर और चौथा, सरकार के लिए कानून-व्यवस्था बनाए रखते हुए आंदोलनकारियों से संवाद की चुनौती आदि।

कॉकरोच जनता पार्टी के 'संसद चलो' आह्वान के राजनीतिक मायने केवल एक विरोध मार्च तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय राजनीति में युवाओं के असंतोष, डिजिटल आंदोलन और पारंपरिक दलों के प्रति अविश्वास का प्रतीक बनकर उभरा है। हालांकि सीजेपी स्वयं को व्यंग्यात्मक आंदोलन बताता है, लेकिन इसके मुद्दे गंभीर राजनीतिक प्रश्न उठाते हैं।

उप्र विस चुनाव 2027 : योगी सरकार की अग्निपरीक्षा

जन जन विचार
...✍ लखनऊ

बिहार और पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में उल्लेखनीय सफलता के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सामने अब सबसे बड़ी राजनीतिक चुनौती 2027 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव है। देश की राजनीति में उत्तर प्रदेश का महत्व केवल इसलिए नहीं है कि यह सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है, बल्कि इसलिए भी कि यहां का जनादेश अक्सर राष्ट्रीय राजनीति की दिशा और दशा तय करता है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि 2027 का चुनाव भाजपा के लिए 2017 और 2022 के चुनावों से भी अधिक महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा इस चुनाव में कानून-व्यवस्था, बुनियादी ढांचे के विकास, एक्सप्रेस-वे, निवेश, धार्मिक पर्यटन, राम मंदिर, महिला सुरक्षा और जनकल्याणकारी योजनाओं को अपनी प्रमुख उपलब्धियों के रूप में जनता के सामने रखेगी। पार्टी का विश्वास है कि पिछले वर्षों में राज्य में हुए विकास कार्य और मजबूत प्रशासनिक छवि उसे तीसरी बार सत्ता तक पहुंचाने में मदद करेंगे।

हालांकि राजनीतिक जानकारों का मानना है कि भाजपा के सामने कई चुनौतियां भी कम नहीं हैं। संगठन में कार्यकर्ताओं की सक्रियता बनाए रखना, विभिन्न सामाजिक वर्गों की अपेक्षाओं को संतुलित करना, स्थानीय असंतोष को दूर करना तथा सत्ता विरोधी रुझानों का प्रभाव कम करना पार्टी के लिए बड़ी परीक्षा होगी। साथ ही विपक्ष भी भाजपा के खिलाफ साझा रणनीति बनाने में जुटा है।

समाजवादी पार्टी अपनी परंपरागत सामाजिक आधार को मजबूत करने के साथ-साथ व्यापक मतदाता वर्ग तक पहुंचने की कोशिश कर रही है। वहीं कांग्रेस भी उत्तर प्रदेश में अपने राजनीतिक आधार को पुनर्जीवित करने के प्रयास में है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विपक्षी दलों के बीच तालमेल, मुस्लिम और पिछड़े वर्गों के वोटों का समीकरण तथा दलित राजनीति की दिशा चुनाव परिणामों पर महत्वपूर्ण असर डाल सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार यह चुनाव मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए व्यक्तिगत रूप से भी बेहद अहम होगा। अब तक उनकी पहचान एक सख्त प्रशासक और निर्णायक नेता के रूप में रही है, लेकिन 2027 का चुनाव यह भी तय करेगा कि वे संगठन को कितना प्रभावी ढंग से साथ लेकर चल पाते हैं और बदलते राजनीतिक समीकरणों के बीच भाजपा को कितनी मजबूती से एकजुट रख सकते हैं।

उत्तर प्रदेश की 403 विधानसभा सीटें और 80 लोकसभा सीटें इसे देश का सबसे प्रभावशाली राजनीतिक राज्य बनाती हैं। यही कारण है कि यहां का चुनाव केवल सरकार बदलने का चुनाव नहीं माना जाता, बल्कि इसे राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करने वाला जनादेश भी माना जाता है।

आने वाले महीनों में प्रदेश की राजनीति विकास बनाम वादों, सुशासन बनाम आरोप-प्रत्यारोप, सामाजिक समीकरण, जातीय गणित और नेतृत्व की विश्वसनीयता के इर्द-गिर्द घूमेगी। ऐसे में 2027 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव न केवल भाजपा और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए, बल्कि पूरे देश की राजनीति के लिए एक निर्णायक मोड़ साबित हो सकता है।

ब्रिटेन में सत्ता परिवर्तन : एंडी बर्नहम के हाथों नई शुरुआत

नई दिल्ली। लंदन से उठी सत्ता परिवर्तन की गूंज पूरी दुनिया में सुनाई दे रही है। ब्रिटेन को पिछले दस वर्षों में अपना सातवां प्रधानमंत्री मिल गया है। एंडी बर्नहम ने प्रधानमंत्री पद की शपथ लेते हुए इसे ब्रिटेन के लिए 'सर्किट ब्रेकर' क्षण बताया है। उनका दावा है कि अब सत्ता केवल लंदन के गलियारों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि देश के हर क्षेत्र और हर नागरिक तक पहुंचेगी।

दो वर्ष पहले ऐतिहासिक जीत दर्ज कर सत्ता में आए कीर स्टारमर का कार्यकाल सबसे कम समय तक प्रधानमंत्री रहने वाले लेबर नेता के रूप में इतिहास में दर्ज हो गया। यह केवल एक व्यक्ति की राजनीतिक हार नहीं, बल्कि उस राजनीति पर जनता के अविश्वास का संकेत भी है जो बड़े वादों के बावजूद जन आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकी।

एंडी बर्नहम 'मैनचेस्टरवाद' की बात करते हैं। उनका जोर आर्थिक और राजनीतिक विकेंद्रीकरण, सार्वजनिक सेवाओं पर अधिक जन नियंत्रण और बेघर लोगों के पुनर्वास पर है।

यूपी में कांग्रेस-सपा गठबंधन में बढ़ीं दरारें

जन जन विचार
...✍ लखनऊ

उत्तर प्रदेश में 2027 विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस और समाजवादी पार्टी (सपा) के रिश्तों में खटास खुलकर सामने आने लगी है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता इमरान मसूद के ताजा बयान ने 'इंडी' गठबंधन के भविष्य को लेकर नई अटकलों को जन्म दे दिया है।

सपा नेता उदयवीर सिंह की टिप्पणी पर पलटवार करते हुए मसूद ने कहा कि गठबंधन की जरूरत कांग्रेस से अधिक समाजवादी पार्टी को थी। उन्होंने दावा किया कि 2024 लोकसभा चुनाव में सपा की सफलता में कांग्रेस गठबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

मसूद ने सपा पर प्रभावशाली मुस्लिम नेताओं की उपेक्षा का आरोप लगाते हुए कहा कि पार्टी ऐसे नेताओं को स्वीकार नहीं करती, जो अपनी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान रखते हों। उन्होंने आजम खान, अतीक अहमद और मुख्तार अंसारी जैसे नेताओं का भी उल्लेख किया।

इमरान मसूद ने यह भी कहा कि उनकी राजनीतिक सफलता सपा के समर्थन से नहीं, बल्कि कांग्रेस नेतृत्व और जनता के विश्वास से मिली है। यह बयान ऐसे समय आया है जब उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राज कुमार सिंह पटेल पहले ही संकेत दे चुके हैं कि 2027 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस सीटों के बंटवारे में समान भागीदारी चाहती है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि दोनों दलों के बीच बढ़ती सार्वजनिक बयानबाजी आगामी चुनाव में विपक्षी एकता के लिए चुनौती बन सकती है। यदि मतभेद समय रहते दूर नहीं हुए, तो उत्तर प्रदेश में इंडी गठबंधन की रणनीति और सीट बंटवारे पर इसका सीधा असर पड़ सकता है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

लाठी की चोट और मौन...

इसके बावजूद हजारों प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतर आए। बाद में पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच टकराव हुआ। पुलिस का दावा है कि बैरिकेड तोड़े गए और अनेक पुलिसकर्मी घायल हुए, जबकि आंदोलनकारियों का आरोप है कि उन पर अनावश्यक बल प्रयोग किया गया। सच चाहे जो भी हो, लोकतंत्र का यह दृश्य निश्चित रूप से सुखद नहीं कहा जा सकता।

लेकिन इस पूरे आंदोलन का सबसे चिंताजनक पक्ष इसके दौरान लगे कुछ विवादित नारे और दिए गए बयान रहे। सोशल मीडिया और विभिन्न समाचार माध्यमों में प्रसारित वीडियो में प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के लिए अत्यंत आपत्तिजनक नारे सुनाई दिए। 'मर गया मोदी', 'मर गया शाह', 'भारत माता का पति कौन?' और 'कश्मीर भारत का हिस्सा नहीं है' जैसे नारे यदि वास्तव में आंदोलन का हिस्सा रहे हैं, तो वे किसी भी लोकतांत्रिक और संवैधानिक आंदोलन की आत्मा नहीं हो सकते।

लोकतंत्र में सरकार की कठोरतम आलोचना का अधिकार प्रत्येक नागरिक को है। प्रधानमंत्री की नीतियों का विरोध करना लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन किसी व्यक्ति की मृत्यु का उपहास, व्यक्तिगत अपमान और राष्ट्र की अखंडता पर प्रश्न खड़े करना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजनीतिक मर्यादा के बीच की रेखा को धुंधला कर देता है।

आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक अभिजीत दीपके द्वारा प्रधानमंत्री के प्रति अत्यंत कठोर और अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किए जाने के वीडियो भी सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बने हैं। यदि आंदोलन का नेतृत्व स्वयं ऐसी भाषा का प्रयोग करता है, तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वह युवाओं को किस प्रकार की लोकतांत्रिक संस्कृति की ओर ले जाना चाहता है? असहमति लोकतंत्र की शक्ति है, लेकिन घृणा कभी उसकी पहचान नहीं हो सकती।

उतना ही बड़ा प्रश्न सरकार और प्रधानमंत्री की भूमिका को लेकर भी है। क्या देश का युवा केवल पुलिस के बैरिकेड और लाठियों के माध्यम से ही सुना जाएगा? क्या संवाद की पहल आंदोलन के बाद होगी या उससे पहले? सरकार की सबसे बड़ी शक्ति उसका संवेदनशील नेतृत्व होता है, केवल उसकी प्रशासनिक शक्ति नहीं। यदि देश का युवा सड़कों पर है, तो उसकी आवाज सुनना भी सरकार का संवैधानिक दायित्व है।

यह भी उतना ही सत्य है कि कुछ विवादास्पद नारों की आड़ लेकर युवाओं के वास्तविक प्रश्नों को खारिज नहीं किया जा सकता। शिक्षा व्यवस्था, पारदर्शिता और युवाओं के भविष्य से जुड़े प्रश्न आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने आंदोलन से पहले थे। लेकिन यह प्रश्न भी आंदोलन के नेतृत्व से पूछा जाना चाहिए कि क्या उसने इन मुद्दों को स्वयं अपने विवादित बयानों और नारों के बोझ तले दबा नहीं दिया?

आज आवश्यकता आत्ममंथन की है। सरकार को यह सोचना होगा कि लोकतंत्र में संवाद की जगह लाठी क्यों ले रही है और आंदोलनकारियों को यह समझना होगा कि राष्ट्र-विरोधी अथवा विभाजनकारी नारे किसी भी जन आंदोलन की नैतिक शक्ति को कमजोर कर देते हैं।

हिंदी साहित्य में संस्कार, अध्यात्म व लोक-मंगल की त्रिवेणी

जन जन विचार

...✍ डॉ मुकेश कुमार

हिंदी साहित्य केवल शब्दों का संकलन या मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह वह पावन धारा है जो मनुष्य को पशुता से उठाकर श्रेष्ठता की ओर ले जाती है। 'साहित्य' शब्द की व्युत्पत्ति 'सहितस्य भाव: साहित्यम' से हुई है, जिसका सीधा अर्थ है 'सहित होने का भाव' या समाज का हितकारी जुड़ाव। इसमें शब्द और अर्थ इस प्रकार मिले होते हैं कि वे व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण करते हैं। यह मानव जीवन की संवेदनाओं, अनुभवों और संघर्षों का एक जीवंत दस्तावेज है, जो समाज के दर्पण के साथ-साथ उसका मार्गदर्शक भी बनता है।

साहित्य पढ़ना और लिखना किसी भी समाज की चेतना और जीवंतता का प्रतीक है। इसे पढ़ने से मनुष्य के अंतर्मन और संस्कारों का परिष्कार होता है। यह पाठक के भीतर सहानुभूति, करुणा और संवेदनशीलता का विकास करता है, जिससे वह दूसरों के दुख-दर्द को अपना समझ पाता है। वहीं साहित्य लिखना समाज के प्रति एक नैतिक उत्तरदायित्व है, जिसके माध्यम से रचनाकार सामाजिक विषमताओं, कुरीतियों और अन्यायों पर चोट करता है।

मानव जीवन में साहित्य की आवश्यकता इसलिए भी अनिवार्य है क्योंकि भौतिक प्रगति मनुष्य को साधन-संपन्न तो बना सकती है, लेकिन संवेदनशील नहीं। साहित्य व्यक्ति को उसके संकीर्ण स्वार्थों (व्यष्टि) से ऊपर उठाकर सर्वकल्याण (समष्टि) की भावना से जोड़ता है। यह मनुष्य की आत्मा को शुद्ध कर अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त करता है और उसे सच्चे अर्थों में इंसान बनाता है।

साहित्य का अंतिम और सर्वोच्च उद्देश्य 'लोक-मंगल' यानी संपूर्ण समाज का कल्याण है। हमारे आचार्यों ने भी माना है कि काव्य की रचना केवल यश या धन के लिए नहीं, बल्कि समाज के अमंगल को दूर कर 'सत्यम, शिवम, सुंदरम' की स्थापना के लिए होती है। यह समाज से अंधविश्वास और भेदभाव को मिटाकर भ्रातृत्व भाव का संचार करता है।

हिंदी साहित्य में संस्कार, अध्यात्म और लोकमंगल का संबंध अत्यंत गहरा, व्यापक और अटूट रहा है। भारतीय मनीषा में साहित्य को कभी भी केवल विलास या व्यक्तिगत आत्मसुख का माध्यम नहीं माना गया, बल्कि इसे मनुष्यता के परिष्कार और समाज-संरचना का मुख्य आधार स्वीकार किया गया। जब हम हिंदी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो पाते हैं कि यहां साहित्य का अंतिम लक्ष्य व्यक्ति के भीतर 'संस्कारों' का संवर्धन करना, 'अध्यात्म' के माध्यम से उसे समष्टि से जोड़ना और अंतत: 'लोक-मंगल' की स्थापना करना रहा है। भक्तिकाल के महान संत कबीरदास संस्कार, अध्यात्म और लोक-मंगल की इस त्रिवेणी के सबसे प्रखर उदाहरण हैं। कबीर ने संस्कारों के परिष्कार के लिए आचरण की शुद्धता और मीठी वाणी पर बल देते हुए कहा- 'ऐसी बाणी बोलिये, मन का आपा खोइ। औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होइ॥' अध्यात्म के क्षेत्र में उन्होंने किसी बाहरी आडंबर या कर्मकांड को न मानकर सहज अंतर-साधना को अपनाया और ईश्वर को घट-घट में व्याप्त बताया— 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढै बन माहि। ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहिं॥' लोक-मंगल के लिए उन्होंने समाज में व्याप्त जाति-पाति और धार्मिक कट्टरता पर करारी चोट करते हुए समतामूलक समाज का संदेश दिया, 'जाति-पाति पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई॥' इस प्रकार कबीर का साहित्य सिद्ध करता है कि सच्चा साहित्य वही है जो व्यक्ति को संस्कारित करे, अध्यात्म से जोड़े और अंतत: लोक-मंगल का मार्ग प्रशस्त करे।

इसी प्रकार, भक्ति काल में जब समाज निराशा और हताशा के दौर से गुजर रहा था, तब भक्तकवियों ने आध्यात्मिक चेतना के माध्यम से जनमानस को नैतिक संबल प्रदान किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में भक्ति आंदोलन के प्रादुर्भाव और उसकी सामाजिक भूमिका की व्याख्या करते हुए लिखा है कि भक्ति काल के कवियों ने देशव्यापी निराशा के बीच नैतिक मूल्यों और आत्मबल के संस्कारों को जीवित रखा।

देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया था ऐसी दशा में अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था? आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य इतिहास पृ सं 97, प्रामाणिक संस्करण,2025 नागरीप्रचारिणी सभा।

भक्तिकाल में 'अध्यात्म' केवल व्यक्तिगत साधना का विषय न रहकर सीधे सामाजिक सरोकारों से जुड़ गया। विशेषकर गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में अध्यात्म और लोक-मंगल का जो समन्वय दिखाई देता है, वह हिंदी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। तुलसीदास का अध्यात्म एकांत का अध्यात्म नहीं है; वह समाज के बीच रहकर लोक-संग्रह और लोक-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। रामचंद्र शुक्ल ने अपने आलोचनात्मक ग्रंथ 'गोस्वामी तुलसीदास' में स्पष्ट किया है कि तुलसीदास की भक्ति पद्धति लोकमंगल की साधनावस्था है।

तुलसीदास जी का काव्य लोक-मंगलामुखी काव्य है। उनकी भक्ति भावना में लोक-रक्षा और लोक-रंजन दोनों का अद्भुत सामंजस्य।

रामचरितमानस में तुलसीदास ने जिस रामराज्य की संकल्पना प्रस्तुत की है, वह वास्तव में अध्यात्म-प्रेरित एक आदर्श समाज-व्यवस्था की झांकी है। वहां अध्यात्म और संस्कार मिलकर लोक-मंगल के रूप में परिणत होते हैं। तुलसी का रामराज्य शोषणमुक्त, भयमुक्त और विषमतारहित समाज का प्रतीक है, जहां प्रत्येक व्यक्ति अपने नैतिक कर्तव्यों का पालन करता है।

'दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब निरूज शरीरा॥' गोस्वामी तुलसीदास (रामचरितमानस, उत्तरकांड)

रीतिकाल के पश्चात् आधुनिक काल के आगमन के साथ हिंदी साहित्य में संस्कार, अध्यात्म और लोक-मंगल का स्वरूप और अधिक व्यापक, आधुनिक एवं सामाजिक सरोकारों से संपन्न हो गया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन संभालते हुए हिंदी भाषियों में भाषागत शुचिता और विचारगत परिष्कार के संस्कार जगाए। उन्होंने साहित्य को समाज-सुधार का सशक्त माध्यम बनाया। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, द्विवेदी जी ने साहित्य के उद्देश्यों को नए सिरे से परिभाषित किया।

छायावादी काव्यधारा तक आते-आते अध्यात्म सूक्ष्म और उदात्त रूप धारण कर लेता है। छायावादी कवियों ने प्रकृति, आत्मा और लोक-मंगल के संबंधों को नए कोण से देखा। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी सुप्रसिद्ध प्रबंधात्मक कविता 'राम की शक्तिपूजा' में भक्ति और अध्यात्म को आधुनिक संघर्ष से जोड़ दिया। निराला के राम का संशय और उनका आत्म-संघर्ष आधुनिक मनुष्य की जिजीविषा का प्रतीक है, जहां शक्ति की साधना अंतत: लोक-मंगल के लिए ही की जाती है। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी कृति 'निराला की साहित्य साधना' में विस्तृत विश्लेषण किया है -

'राम की शक्तिपूजा' केवल पौराणिक कथा का पुनराख्यान नहीं है, बल्कि यह अन्याय के विरुद्ध सत्य और शक्ति के लोक-कल्याणकारी संयोजन का महाकाव्य है।

छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा की वेदना और करुणा का आधार भी कोई व्यक्तिगत निराशा नहीं, बल्कि समष्टिगत दुख को आत्मसात करने का आध्यात्मिक प्रयास था। महादेवी जी अपनी गद्य रचनाओं और निबंधों में स्पष्ट करती हैं कि कविता का अंतिम सरोकार मनुष्य की अंतश्चेतना को करुणा से भरना है ताकि वह लोक के दुखों को समझ सके। अपने प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'साहित्यकार की आस्था' में महादेवी वर्मा लिखती हैं-

'साहित्यकार की आस्था उस व्यापक जीवन-चेतना में होती है जो व्यक्ति को अपनी सीमाओं से बाहर निकालकर समष्टि के दुख-सुख से जोड़ती है। करुणा ही वह धागा है जो संपूर्ण लोक को एक सूत्र में पिरोता है।'

जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य 'कामायनी' में भी समरसता और आनंदवाद का जो दर्शन मिलता है, वह व्यक्तिगत अहंकार के विसर्जन और लोक-मंगल के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। कामायनी का 'आनंद सर्ग' इस बात की स्थापना करता है कि जब तक मनुष्य अपने भेद-भाव और संकुचित अहम को त्यागकर सबमें एक ही चेतना के दर्शन नहीं करता, तब तक उसे वास्तविक सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

'ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।

एक दूसरे से न मिल सके, यह विडंबना है जीवन की।'

-जयशंकर प्रसाद (कामायनी, रहस्य सर्ग)

कथा-साहित्य के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद ने संस्कार और लोक-मंगल की भावना को यथार्थ के धरातल पर उतारा। प्रेमचंद ने साहित्य को केवल कल्पना का महल नहीं माना, बल्कि उसे समाज के यथार्थ और दलित-शोषित वर्ग की समस्याओं को उठाने का साधन बनाया। अपने प्रसिद्ध भाषण 'साहित्य का उद्देश्य' में प्रेमचंद ने साहित्य के मापदंडों को स्पष्ट करते हुए लोकमंगलकारी साहित्य की परिभाषा तय की।

'साहित्य हमारी देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है... साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़ और परिमार्जित हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो।' (प्रेमचंद)

'प्रेमचंद के उपन्यासों में नैतिक संस्कार और लोक-मंगल की तड़प स्पष्ट दिखाई देती है। 'गोदान' का होरी केवल एक किसान नहीं है, बल्कि वह भारतीय ग्रामीण समाज के उन सनातन संस्कारों और नैतिक मूल्यों का जीवंत प्रतीक है जो भयानक गरीबी और शोषण के बावजूद अपनी ईमानदारी और मर्यादा को नहीं छोड़ते। नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'दूसरी परंपरा की खोज' में प्रेमचंद के लोक-धर्मी दृष्टिकोण की सराहना करते हुए लिखा है कि प्रेमचंद का साहित्य भारतीय लोक-जीवन की वास्तविक नैतिकता और जिजीविषा को उजागर करता है।

'प्रेमचंद ने भारतीय साहित्य को उन लोगों की आवाज दी जो अब तक उपेक्षित थे। उनका साहित्य लोक-मंगल की उस जमीनी अवधारणा से अनुप्राणित है जो समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन-सुधार का स्वप्न देखती है।'

प्रयोगवाद और नई कविता के दौर में भी 'संस्कार' और 'अध्यात्म' की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई, बल्कि उनका पुनर्मूल्यांकन किया गया। अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) ने अपनी लंबी कविता 'असाध्य वीणा' में यह दर्शाया है कि कैसे कलाकार का संपूर्ण अहंकार-विसर्जन ही सच्ची कला और लोक-मंगल को जन्म देता है। जब वीणा-वाधक प्रियंवद केशकंबली अपने 'स्व' का विसर्जन कर देता है, तभी वीणा से वह संगीत फूटता है जो संपूर्ण लोक को आनंदित कर देता है। अज्ञेय अपने निबंध संग्रह 'आत्मनेपद' में लिखते हैं-

कलाकार का वास्तविक समर्पण अपने 'अहम' का विसर्जन है। जब तक कलाकार स्वयं को भूलकर समष्टि में लीन नहीं होता, तब तक उसकी कृति में वह सर्वव्यापी सत्य उत्पन्न नहीं हो सकता जो लोक का कल्याण करे।

समकालीन हिंदी साहित्य में भी लोक-मंगल, संस्कार और अध्यात्म की यह परंपरा नए सामाजिक विमर्शों जैसे-स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श और पर्यावरण-विमर्श के माध्यम से प्रवाहित हो रही है। आज साहित्य का उद्देश्य पर्यावरण की रक्षा, स्त्री और वंचित वर्गों के अधिकारों तथा मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना के संस्कारों को गढ़ना बन गया है।

हिंदी साहित्य का संपूर्ण इतिहास यह सिद्ध करता है कि 'संस्कार', 'अध्यात्म' और 'लोक-मंगल' कोई तीन अलग-अलग दिशाएं नहीं हैं, बल्कि ये एक ही महायात्रा के तीन चरण हैं। संस्कार व्यक्ति के अंत:करण को मांजते हैं; अध्यात्म उसे स्वयं से परे संपूर्ण सृष्टि से जोड़ता है; और लोक-मंगल उस आध्यात्मिक अनुभूति की सामाजिक परिणति है। हिंदी के मूर्धन्य आलोचकों, संतों और साहित्यकारों के प्रामाणिक संदर्भ और ग्रंथ-पृष्ठ इस बात की गवाही देते हैं कि जब-जब साहित्य इस त्रिविध मार्ग पर चला है, तब-तब उसने केवल समाज का मार्गदर्शन ही नहीं किया, बल्कि मानवता को चिरंतन प्रकाश भी प्रदान किया है। आज के डिजिटल दौर में साहित्य पढ़ना बहुत जरूरी है क्योंकि यह हमें केवल इंटरनेट की अधूरी जानकारियों पर भरोसा करने के बजाय गहराई से सोचना सिखाता है। साहित्य पढ़ने से युवाओं को दूसरों के सुख-दुख और भावनाओं को समझने की सीख मिलती है, जिससे इंसानियत और रिश्तों की कद्र बढ़ती है। यह हमें सही और गलत का फर्क समझने में मदद करता है और कठिन परिस्थितियों में सही फैसले लेने का हौसला देता है। साहित्य युवाओं को अपनी संस्कृति से जोड़े रखता है और उन्हें सिर्फ एक सफल इंसान ही नहीं, बल्कि एक समझदार, शांत और दिल से अच्छा मनुष्य बनाता है।

लेखक हिंदी विभाग, चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी, जींद (हरियाणा) के प्राध्यापक हैं।

स्पेन बना फुटबॉल का नया बादशाह

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

विश्व फुटबॉल को नया चैंपियन मिल गया है। फीफा विश्व कप 2026 के रोमांचक फाइनल में स्पेन ने गत चैंपियन अर्जेंटीना को 1-0 से हराकर दूसरी बार विश्व कप का ताज अपने नाम कर लिया। न्यू जर्सी में खेले गए इस यादगार मुकाबले का फैसला निर्धारित 90 मिनट में नहीं हो सका। अतिरिक्त समय के 106वें मिनट में फेरान टोरेस ने विजयी गोल दागकर स्पेन को ऐतिहासिक जीत दिलाई।

यह मुकाबला केवल दो टीमों के बीच नहीं, बल्कि दो फुटबॉल विचारधाराओं की टक्कर था। एक ओर लियोनेल मेसी की अनुभवी अर्जेंटीना थी, जो लगातार दूसरा विश्व कप जीतकर इतिहास रचना चाहती थी, वहीं दूसरी ओर युवा सितारों से सजी स्पेनिश टीम थी, जिसने पूरे टूर्नामेंट में तेज पासिंग, आक्रामक फुटबॉल और अनुशासित खेल का शानदार प्रदर्शन किया।

पूरे मैच में स्पेन का गेंद पर नियंत्रण अधिक रहा, जबकि अर्जेंटीना ने मजबूत रक्षात्मक रणनीति अपनाई। पहले हाफ में दोनों टीमों को गोल के अवसर मिले, लेकिन कोई भी उन्हें भुना नहीं सका। दूसरे हाफ में मुकाबला और अधिक संघर्षपूर्ण हो गया। इंजरी टाइम में अर्जेंटीना के एंजो फर्नांडीज को दूसरा पीला कार्ड मिलने के बाद टीम 10 खिलाड़ियों के साथ खेलने को मजबूर हो गई।

अतिरिक्त समय में स्पेन ने लगातार दबाव बनाए रखा। 106वें मिनट में फेरान टोरेस ने शानदार फिनिश के साथ वह गोल किया, जिसने पूरे स्टेडियम को उत्साह से भर दिया। इसके बाद अर्जेंटीना बराबरी का गोल नहीं कर सकी और स्पेन ने विश्व फुटबॉल के शिखर पर अपना कब्जा जमा लिया।

इस हार के साथ लियोनेल मेसी का लगातार दो विश्व कप जीतने का सपना अधूरा रह गया। दूसरी ओर, स्पेन ने वर्षों बाद फिर साबित कर दिया कि प्रतिभा, टीमवर्क और धैर्य के दम पर विश्व फुटबॉल पर राज किया जा सकता है।

फुटबॉल केवल जीत और हार का खेल नहीं, बल्कि अनुशासन, रणनीति और सामूहिक प्रयास का उत्सव है। स्पेन की यह जीत आने वाली पीढ़ी के खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बनेगी, जबकि अर्जेंटीना और मेसी का संघर्ष खेल भावना और दृढ़ संकल्प की मिसाल के रूप में हमेशा याद रखा जाएगा।

विश्व कप के लिए पुरुष हॉकी टीम घोषित

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

हॉकी इंडिया ने 15 से 30 अगस्त तक बेल्जियम और नीदरलैंड में आयोजित होने वाले एफआईएच पुरुष हॉकी विश्व कप 2026 के लिए 20 सदस्यीय भारतीय टीम की घोषणा कर दी है। अनुभवी डिफेंडर हरमनप्रीत सिंह को एक बार फिर टीम की कप्तानी सौंपी गई है। टीम में अनुभवी खिलाड़ियों के साथ उभरती युवा प्रतिभाओं को भी शामिल किया गया है।

गोलकीपिंग की जिम्मेदारी मोहित एचएस और सूरज करकेरा संभालेंगे, जबकि रक्षा पंक्ति में हरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, जुगराज सिंह, जरमनप्रीत सिंह, संजय, सुमित और यशदीप सिवाच जैसे भरोसेमंद खिलाड़ी मौजूद हैं। मिडफील्ड में मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, नीलाकांता शर्मा, राजिंदर सिंह और आदित्य अर्जुन लालागे टीम को मजबूती देंगे। वहीं आक्रमण की जिम्मेदारी मनदीप सिंह, दिलप्रीत सिंह, अभिषेक, सुखजीत सिंह और शिलानंद लाकड़ा के कंधों पर होगी।

मुख्य कोच क्रेग फुल्टन ने टीम पर भरोसा जताते हुए कहा कि यह अनुभव और युवा जोश का संतुलित मिश्रण है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन के दम पर टीम में जगह बनाई है और उनका लक्ष्य एक समय में एक मैच पर ध्यान केंद्रित करते हुए आगे बढ़ना है।

भारत को पूल-डी में इंग्लैंड, पाकिस्तान और वेल्स के साथ रखा गया है। टीम अपने अभियान की शुरुआत 15 अगस्त को वेल्स के खिलाफ करेगी।

टीम इंडिया की हार के लिए कोच व कप्तान जिम्मेदार : सबा करीम

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम के हालिया खराब प्रदर्शन के बाद पूर्व क्रिकेटर और चयनकर्ता सबा करीम ने टीम प्रबंधन की रणनीति पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि हार के लिए केवल खिलाड़ी ही नहीं, बल्कि मुख्य कोच गौतम गंभीर और कप्तान भी समान रूप से जिम्मेदार हैं।

सबा करीम के अनुसार, भारतीय टीम एक ही रणनीति पर लगातार खेलने की कोशिश कर रही है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में परिस्थितियों, पिच और विपक्ष के अनुसार रणनीति बदलनी पड़ती है। उनका मानना है कि विश्व कप जीत के बाद टीम प्रबंधन जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास में आ गया, जिसका असर हालिया प्रदर्शन पर दिखाई दिया। उन्होंने टीम के भीतर संवाद और पारदर्शिता की कमी का भी उल्लेख करते हुए कहा कि कोच और कप्तान मिलकर टीम की रणनीति, प्लेइंग इलेवन और ड्रेसिंग रूम का माहौल तय करते हैं। यदि दोनों के बीच स्पष्ट तालमेल नहीं होगा, तो उसका असर प्रदर्शन पर पड़ना स्वाभाविक है।

करीम ने कहा कि भारतीय टीम को परिस्थितियों के अनुरूप अपनी रणनीति में बदलाव लाना होगा और टीम के भीतर बेहतर संवाद स्थापित करना होगा। हालांकि, यह उनके व्यक्तिगत विचार हैं और टीम के प्रदर्शन का आकलन कई अन्य कारकों के आधार पर भी किया जाता है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

छात्रों के बहाने पीएम आवास...

निशाना बनाए जाने के बाद राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी थी।

दूसरी ओर, कांग्रेस ने अपने प्रदर्शन को लोकतांत्रिक अधिकार बताते हुए केंद्र सरकार के समक्ष पांच प्रमुख मांगें रखीं। पार्टी ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे, केंद्रीय गृहमंत्री द्वारा संसद के दोनों सदनों में विस्तृत बयान, पूरे प्रकरण पर संसद में व्यापक चर्चा, छात्रों की शिकायतों का गंभीर समाधान, तथा प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा और पुलिस कार्रवाई की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

इस मुद्दे पर सत्तापक्ष और विपक्ष आमने-सामने हैं। जहां सरकार इसे सुरक्षा और लोकतांत्रिक मर्यादाओं का प्रश्न बता रही है, वहीं कांग्रेस इसे जनहित और छात्रों की आवाज उठाने का प्रयास बता रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद संसद के आगामी सत्र में भी प्रमुख मुद्दा बना रह सकता है।

लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन नागरिकों और राजनीतिक दलों का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन राष्ट्रीय नेतृत्व की सुरक्षा और लोकतांत्रिक मर्यादाओं का संतुलन बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है। ऐसे संवेदनशील मामलों में संवाद, संसदीय चर्चा और संवैधानिक संस्थाओं के माध्यम से समाधान लोकतंत्र को अधिक मजबूत बनाता है।

अरुणाचल : रस्सी से उल्टा...

पुल उपलब्ध नहीं है। वीडियो में महिलाएं पहले सुरक्षा के लिए रस्सी बांधती हैं और फिर तार के सहारे धीरे-धीरे रेंगते हुए नदी के दूसरे किनारे तक पहुंचती हैं। इस दौरान एक महिला मुस्कराते हुए खुद को 'खतरों की खिलाड़ी' भी कहती सुनाई देती है।

वीडियो के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर महिलाओं के साहस की व्यापक सराहना हो रही है, वहीं दुर्गम इलाकों में सड़क और पुल जैसी बुनियादी सुविधाओं के अभाव पर गंभीर सवाल भी उठ रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि मानसून के दौरान नदियों में जलस्तर बढ़ने से आवाजाही और अधिक खतरनाक हो जाती है, जिससे ग्रामीणों की जान हमेशा जोखिम में रहती है।

यह घटना सीमांत क्षेत्रों में सुरक्षित संपर्क व्यवस्था, स्थायी पुलों और बेहतर आधारभूत संरचना की तत्काल आवश्यकता को एक बार फिर रेखांकित करती है।

लाचित बरफुकन की गाथा अब बड़े पर्दे पर

असम के स्वाभिमान को मिलेगा वैश्विक मंच

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम की धरती केवल प्राकृतिक सौंदर्य के लिए ही नहीं, बल्कि अपने अद्वितीय शौर्य और गौरवशाली इतिहास के लिए भी जानी जाती है। इसी इतिहास के सबसे उज्ज्वल नक्षत्र हैं लाचित बरफुकन, जिन्होंने न केवल असम की अस्मिता की रक्षा की, बल्कि विदेशी साम्राज्यवादी विस्तार के सामने अदम्य साहस का परिचय दिया। अब यदि उनके जीवन पर भव्य हिन्दी फिल्म बनती है, तो यह केवल एक सिनेमाई परियोजना नहीं, बल्कि भारत के उपेक्षित इतिहास को उसके उचित स्थान पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास होगा।

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने हाल ही में घोषणा की है कि प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक आदित्य धर से लाचित बरफुकन के जीवन पर आधारित फिल्म के निर्देशन को लेकर चर्चा की गई है। यदि यह परियोजना साकार होती है तो असम का इतिहास पहली बार इतने व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचेगा।

24 नवंबर 1622 को जन्मे लाचित बरफुकन ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र और मातृभूमि की सेवा को समर्पित किया। वे केवल एक योद्धा नहीं थे, बल्कि एक कुशल प्रशासक, दूरदर्शी रणनीतिकार और अनुशासनप्रिय सेनानायक भी थे। सन् 1671 में सराईघाट के युद्ध में उन्होंने अत्यंत सीमित संसाधनों के बावजूद विशाल मुगल सेना को पराजित कर भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अध्याय जोड़ा। ब्रह्मपुत्र नद की भौगोलिक विशेषताओं का अदभुत सैन्य उपयोग आज भी विश्व के सैन्य संस्थानों में अध्ययन का विषय है।

इतिहास के पन्ने बताते हैं कि गंभीर रूप से बीमार होने के बावजूद जब उनकी सेना पीछे हटने लगी, तब लाचित स्वयं युद्ध नौका पर सवार होकर रणभूमि में उतर पड़े। उनका संदेश स्पष्ट था–'कर्तव्य से बड़ा कुछ नहीं।' उनके साहस ने सैनिकों में नया उत्साह भर दिया और मुगल सेना को पराजित होकर पीछे हटना पड़ा। यही वह विजय थी जिसने असम की स्वतंत्र अस्मिता को अक्षुण्ण रखा।

विडंबना यह है कि जिन वीरों को विश्व जानता है, उनमें लाचित बरफुकन का नाम अभी भी अपेक्षित स्थान नहीं पा सका है। आज देश के अनेक युवा उनके नाम से भी परिचित नहीं हैं। ऐसे में उन पर बनने वाली फिल्म केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं होगी, बल्कि नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास से जोड़ने का एक सशक्त अभियान सिद्ध हो सकती है।

यह समय इतिहास को राजनीति के चश्मे से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के दृष्टिकोण से देखने का है। लाचित बरफुकन किसी एक प्रदेश के नायक नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के गौरव हैं। यदि सिनेमा के माध्यम से उनकी गाथा विश्व पटल तक पहुंचती है तो यह केवल असम की नहीं, बल्कि पूरे भारत की सांस्कृतिक विजय होगी।

लाचित की तलवार ने जिस प्रकार सराईघाट में असम के स्वाभिमान की रक्षा की थी, अब उनकी कहानी बड़े पर्दे पर भारत की ऐतिहासिक चेतना को नई ऊर्जा प्रदान कर सकती है।

पूजाघर में निकला जहरीले कोबरा सांपों का कुनबा

जन जन विचार
...✍ चंपारण

बरसात का मौसम शुरू होते ही देश के कई हिस्सों में सांपों के निकलने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। लेकिन बिहार के पश्चिम चंपारण जिले के नवलपुर गांव में जो दृश्य सामने आया, उसने पूरे इलाके को दहला दिया। यहां एक परिवार के पूजाघर में भगवान की प्रतिमाओं के बीच जहरीले कोबरा सांपों का पूरा कुनबा रह रहा था। जब परिवार की महिला की नजर उन पर पड़ी तो घर में अफरा-तफरी मच गई और देखते ही देखते पूरा गांव मौके पर जुट गया।

जानकारी के अनुसार, करीब 120 वर्ग फुट के पूजाघर में दर्जनों कोबरा सांप छिपे हुए थे। परिवार के सदस्यों ने समय रहते उन्हें देख लिया, जिससे कोई बड़ा हादसा टल गया। ग्रामीण इसे ईश्वर की कृपा मान रहे हैं कि किसी को नुकसान नहीं पहुंचा।

घटना के बाद स्थानीय लोगों ने सांपों को सुरक्षित तरीके से एक प्लास्टिक कंटेनर में रखा और वन विभाग को सूचना दी। अधिकारियों के पहुंचने तक पूरे गांव में लोगों की भीड़ लगी रही। सोशल मीडिया पर घटना का वीडियो भी तेजी से वायरल हो रहा है।

विशेषज्ञों का कहना है कि मानसून के दौरान बिलों में पानी भर जाने से सांप सुरक्षित और सूखी जगहों की तलाश में घरों में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसे समय में पुराने सामान, लकड़ी के ढेर, स्टोर रूम और पूजा घर जैसे कम उपयोग वाले स्थानों की नियमित सफाई और जांच जरूरी है।

वन्यजीव विशेषज्ञों ने लोगों से अपील की है कि सांप दिखने पर घबराने या उसे मारने की बजाय तुरंत वन विभाग या प्रशिक्षित रेस्क्यू टीम को सूचना दें।

कम तेल में बनाएं अरबी के पत्तों के कुरकुरे पकोड़े

बरसात का मौसम हो और गरमा-गरम चाय के साथ कुरकुरे पकोड़ों की बात न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। ऐसे में अरबी के पत्तों के पकोड़े (पतोड़) कई घरों की पहली पसंद होते हैं। लेकिन अधिक तेल में तले जाने के कारण कई लोग इन्हें खाने से बचते हैं। यदि आप भी कम तेल में स्वादिष्ट और कुरकुरे पकोड़े बनाना चाहते हैं, तो यह आसान रेसिपी आपके लिए बेहतरीन विकल्प है।

इस विधि की सबसे खास बात है कच्चे चावल का पेस्ट, जो पकोड़ों को बिना डीप फ्राई किए भी शानदार कुरकुरापन देता है। साथ ही अमचूर पाउडर का उपयोग अरबी के पत्तों की प्राकृतिक खुजली पैदा करने वाली प्रवृत्ति को कम करने में मदद करता है।

सामग्री : 4-5 बड़े अरबी के पत्ते,1 कप बेसन, ½ कप कच्चे चावल (भिगोए हुए), 6-7 लहसुन की कलियां, 1-2 हरी मिर्च या स्वादानुसार लाल मिर्च, 1 छोटा चम्मच जीरा, ½ छोटा चम्मच हल्दी, ½ छोटा चम्मच गरम मसाला, 1 से 1½ छोटा चम्मच अमचूर पाउडर, नमक स्वादानुसार, 2-3 चम्मच तेल (शैलो फ्राई के लिए)

बनाने की विधि :

1. तैयार करें चावल का पेस्ट

भीगे हुए चावल, लहसुन, मिर्च और जीरे को थोड़ा पानी डालकर मिक्सी में बारीक पीस लें।

2. बेसन का घोल बनाएं

चावल के पेस्ट में बेसन, हल्दी, गरम मसाला, अमचूर और नमक मिलाकर गाढ़ा घोल तैयार करें।

3. पत्तों की परत बनाएं

अरबी के पत्तों को धोकर उनकी मोटी नसें हल्की काट दें। सबसे बड़े पत्ते पर घोल लगाएं, फिर दूसरा पत्ता रखकर दोबारा घोल लगाएं। इसी तरह 4-5 पत्तों की परत तैयार करें।

4. रोल बनाकर भाप में पकाएं

किनारों को मोड़ते हुए पत्तों का टाइट रोल बना लें। स्टीमर में 12-15 मिनट तक मध्यम आंच पर भाप में पकाएं। पूरी तरह ठंडा होने दें।

5. स्लाइस काटें

ठंडा होने के बाद रोल को लगभग आधा इंच मोटे गोल टुकड़ों में काट लें।

6. कम तेल में सेंकें

नॉन-स्टिक तवे पर 2-3 चम्मच तेल गर्म करें और स्लाइस को दोनों ओर से सुनहरा व कुरकुरा होने तक शैलो फ्राई करें।

জন জন বিচাৰ
সপ্তাহৰ চিন্তা
সকলোতকৈ ডাঙৰ সম্পদ ধন নহয়, সৎ চৰিত্ৰ আৰু বিশ্বাস।

ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ
সাপ্তাহিক
জন জন বিচাৰ
Guwahati, 24 July, 2026 Friday :: শুক্ৰবাৰ, শাওণ, শুক্ল, একাদশী, শকাব্দ ১৯৪৮

‘বৰ্ষশ্ৰেষ্ঠ সংবাদদাতা—২০২৬’

উজনি অসমত প্ৰলয়ংকৰী বান, নিহতৰ পৰিয়াললৈ ৪ লাখ টকাৰ অনুদান ঘোষণা মুখ্যমন্ত্ৰীৰ

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

উজনি অসমত অভূতপূৰ্ব বানে সৃষ্টি কৰা ভয়াবহ পৰিস্থিতিৰ মাজতে মুখ্যমন্ত্ৰী ড° হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই বুধবাৰে শিৱসাগৰ আৰু চৰাইদেউ জিলাৰ বানপীড়িত অঞ্চল পৰিদৰ্শন কৰি নিহত প্ৰতিজন লোকৰ পৰিয়াললৈ ৪ লাখ টকাৰ এককালীন সাহায্য ঘোষণা কৰে। তেওঁ কয়, প্ৰয়োজন অনুসৰি ক্ষতিগ্ৰস্ত পৰিয়ালসমূহক ভৱিষ্যতেও চৰকাৰে সহায় আগবঢ়াব।

বানাক্ৰান্ত পৰিয়ালৰ সৈতে মতবিনিময় কৰি মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে কয়, “এই দুৰ্যোগত কোনো পৰিয়াল অকলশৰীয়া নহয়। পুনৰ সংস্থাপন আৰু জীৱিকা পুনৰ গঢ়ি তোলাৰ ক্ষেত্ৰত ৰাজ্য চৰকাৰ প্ৰতিটো পদক্ষেপত তেওঁলোকৰ কাষত থাকিব।”

বৰ্তমানৰ বানত শিৱসাগৰ জিলা সৰ্বাধিক ক্ষতিগ্ৰস্ত হৈছে। চৰকাৰী তথ্য অনুসৰি জিলাখনত প্ৰায় ৩.৬ লাখ লোক বানৰ কবলত পৰিছে। ইয়াৰ পিছতে যোৰহাটত প্ৰায় ৮৮ হাজাৰ আৰু চৰাইদেউত ৭২ হাজাৰতকৈ অধিক লোক ক্ষতিগ্ৰস্ত হৈছে।

মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে জনায় যে শিৱসাগৰ জিলাতেই এতিয়াও প্ৰায় ৭০ জন লোক সন্ধানহীন। সেইবাবে মৃত্যুৰ চূড়ান্ত সংখ্যা এতিয়াই নিৰ্ধাৰণ কৰা সম্ভৱ নহয়। তেওঁৰ ভাষ্যত, “আহিবলগীয়া তিনিৰ পৰা চাৰি দিনৰ ভিতৰতহে প্ৰকৃত পৰিস্থিতি স্পষ্ট হ’ব।”

মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে কয়, বহু ঠাইত পানী ঘৰৰ চাললৈকে উঠিছে। ঘৰ-বাৰী, কৃষিভূমি আৰু গৃহপালিত পশুধনৰ ব্যাপক ক্ষতি হৈছে। ই অসমে অতীতত খুব কমেই দেখা এক ভয়ংকৰ দুৰ্যোগ। ইফালে, বহু বানাক্ৰান্ত লোকে উদ্ধাৰ অভিযান বিলম্বিত হোৱা আৰু কিছুমান অঞ্চলত পৰ্যাপ্ত সাহায্য নোপোৱাৰ অভিযোগ উত্থাপন কৰিছে। যদিও জিলা প্ৰশাসনে ব্যাপক হাৰত সাহায্য বিতৰণ চলি থকাৰ দাবী কৰিছে, তথাপিও বহু পৰিয়ালে সময়মতে উদ্ধাৰ নোপোৱাত নিজ উদ্যোগে সুৰক্ষিত স্থানলৈ আঁতৰি যাবলগীয়া হোৱা বুলি অভিযোগ কৰে।

জিলা প্ৰশাসনে জনোৱা মতে, নাজিৰা, শিৱসাগৰ আৰু দিমৌ ৰাজহ চক্ৰত চাউল, দাইল, বিশুদ্ধ খোৱাপানী, ত্ৰিপল, শিশুখাদ্য, নিমখ, সৰিয়হৰ তেল, বিস্কুট আৰু চিৰা আদি অত্যাৱশ্যকীয় সামগ্ৰী বিতৰণ অব্যাহত আছে। ইতিমধ্যে শিৱসাগৰৰ কিছুমান অঞ্চলত বানপানী নামিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে যদিও ব্ৰহ্মপুত্ৰ, দিখৌ আৰু দিহিং নদীৰ পানী বহু ঠাইত এতিয়াও বিপদসীমাৰ ওপৰত আছে। আনহাতে দিচাং আৰু দৰিকা নদীৰ পানী পুনৰ বৃদ্ধি পোৱাত বান পৰিস্থিতি সম্পূৰ্ণ স্বাভাৱিক হ’বলৈ এতিয়াও সময় লাগিব বুলি আশংকা প্ৰকাশ কৰা হৈছে।

নীট ২০২৬ ঃ অসমৰ প্ৰদৰ্শনত অৱনতি, যোগ্যতা অৰ্জন কৰা শিক্ষাৰ্থীৰ সংখ্যা হ্ৰাস

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

ৰাষ্ট্ৰীয় যোগ্যতা তথা প্ৰৱেশ পৰীক্ষা (নীট-ইউজি) ২০২৬ৰ ফলাফলত অসমৰ প্ৰদৰ্শনত কিছু অৱনতি পৰিলক্ষিত হৈছে। ৰাষ্ট্ৰীয় পৰীক্ষা সংস্থাৰ প্ৰকাশিত তথ্য অনুসৰি, এইবাৰ অসমত চিকিৎসা শিক্ষাৰ প্ৰৱেশ পৰীক্ষাত যোগ্যতা অৰ্জন কৰা শিক্ষাৰ্থীৰ সংখ্যা বিগত বছৰৰ তুলনাত প্ৰায় ৭ শতাংশ হ্ৰাস পাইছে।

অসমে উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ ভিতৰত সৰ্বাধিক সংখ্যক সফল শিক্ষাৰ্থীৰে নিজৰ শীৰ্ষ স্থান বজাই ৰাখিছে। ২০২৬ চনত ৰাজ্যখনৰ ১৮,৪৩৫ গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়ে পৰীক্ষাত উত্তীৰ্ণ হৈ যোগ্যতা লাভ কৰিছে। কিন্তু ২০২৫ চনত এই সংখ্যা আছিল ১৯,৮০৯ গৰাকী।

৪৩ হাজাৰৰো অধিক শিক্ষাৰ্থীৰ অংশগ্ৰহণ

চলিত বৰ্ষত অসমত মুঠ ৪৩,১৮৭ গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়ে চিকিৎসা শিক্ষাৰ ৰাষ্ট্ৰীয় প্ৰৱেশ পৰীক্ষাৰ বাবে নাম পঞ্জীয়ন কৰিছিল। ইয়াৰে ৩৬,২৮৩ গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়ে পৰীক্ষাত অৱতীৰ্ণ হয় আৰু ১৮,৪৩৫ গৰাকীয়ে উত্তীৰ্ণ হৈ চিকিৎসা শিক্ষাৰ বাবে যোগ্যতা অৰ্জন কৰে।

উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ অধিকাংশ ৰাজ্যতে হ্ৰাস

ৰাষ্ট্ৰীয় পৰীক্ষা সংস্থাৰ তথ্য অনুসৰি, উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ অধিকাংশ ৰাজ্যতে এইবাৰ সফল শিক্ষাৰ্থীৰ সংখ্যা হ্ৰাস পাইছে। অৰুণাচল প্ৰদেশত ২০২৫ চনৰ ২,৬৪৫ গৰাকী উত্তীৰ্ণৰ বিপৰীতে ২০২৬ চনত এই সংখ্যা ২,১৭৯লৈ হ্ৰাস পাইছে।

মণিপুৰত সফল শিক্ষাৰ্থীৰ সংখ্যা ৬,১১৬১ পৰা কমি ৫,০৭০ হৈছে।

মেঘালয়ত ২০২৫ চনত ১,৬৮১ গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়ে যোগ্যতা লাভ কৰাৰ বিপৰীতে এইবাৰ ১,৬৫৮ গৰাকীয়ে সফলতা লাভ কৰিছে। ত্ৰিপুৰাত উত্তীৰ্ণৰ সংখ্যা ২,২৬৫১ পৰা ১,৮০৭লৈ আৰু ছিকিমত ৬৪৩ৰ পৰা ৫৭৯লৈ হ্ৰাস পাইছে।

মিজোৰাম আৰু নাগালেণ্ডত বৃদ্ধি

উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ ভিতৰত কেৱল মিজোৰাম আৰু নাগালেণ্ডত সফল শিক্ষাৰ্থীৰ সংখ্যা বৃদ্ধি লাভ কৰিছে।

মিজোৰামত ২০২৫ চনৰ ১,২৪৩ গৰাকী উত্তীৰ্ণৰ বিপৰীতে এইবাৰ ১,৩৫৩ গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়ে যোগ্যতা অৰ্জন কৰিছে। নাগালেণ্ডত সফল শিক্ষাৰ্থীৰ সংখ্যা ১,৮১৩ৰ পৰা বৃদ্ধি পাই ১,৯৪৬ হৈছে।

দেশজুৰি ১১ লাখৰো অধিক শিক্ষাৰ্থী উত্তীৰ্ণ

সমগ্ৰ দেশত ২০২৬ চনৰ চিকিৎসা শিক্ষাৰ ৰাষ্ট্ৰীয় প্ৰৱেশ পৰীক্ষাৰ বাবে ২২,৭৯,৭৪৩ গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়েনাম পঞ্জীয়ন কৰিছিল। ইয়াৰে ১৯,৯৯,৮৯৫ গৰাকী পৰীক্ষাত অৱতীৰ্ণ হয় আৰু ১১,২১,১৮৫ গৰাকী শিক্ষাৰ্থীয়ে যোগ্যতা লাভ কৰে।

চতুৰ্থ প্ৰচেষ্টাত সফলতা : উজলিল বজালীৰ কৌস্তুভ

জন জন বিচাৰ
...✍ বজালী

অদম্য অধ্যৱসায় আৰু দৃঢ় মনোবল থাকিলে সফলতা যে নিশ্চিত, তাৰেই উজ্জ্বল দৃষ্টান্ত স্থাপন কৰিলে বজালী জিলাৰ হাঠিনাপুৰ গাঁৱৰ মেধাবী যুৱক কৌস্তুভ মেধিয়ে। সদ্য ঘোষিত সৰ্বভাৰতীয় ‘নীট-ইউজি ২০২৬’ পৰীক্ষাত ৫৩০ নম্বৰ লাভ কৰি

তেওঁ সৰ্বভাৰতীয় ভিত্তিত ৫৫,৩১৬ সংখ্যক স্থান অধিকাৰ কৰি সফলতাৰে উত্তীৰ্ণ হৈছে।

উল্লেখযোগ্য যে কৌস্তুভে চতুৰ্থবাৰৰ বাবে নীট পৰীক্ষাত অৱতীৰ্ণ হৈ এই কৃতিত্ব অৰ্জন কৰিছে। পূৰ্বৰ তিনিটা প্ৰচেষ্টাত ব্যৰ্থ হ’লেও তেওঁ কেতিয়াও মনোবল হেৰুৱাই নাছিল। নিজৰ লক্ষ্যত অটল থাকি কঠোৰ পৰিশ্ৰমৰ জৰিয়তে অৱশেষত তেওঁ সফলতাৰ শিখৰত উপনীত হয়।

সাংবাদিকৰ সৈতে হোৱা এক অন্তৰংগ আলাপত মধুৰ কণ্ঠৰ অধিকাৰী কৌস্তুভে বিষ্ণুপ্ৰসাদ ৰাভাৰ এটি গীত গাই নিজৰ অনুভৱ ব্যক্ত কৰে। তেওঁ কয় যে, এই সফলতাৰ আঁৰত শুভাকাংক্ষীসকল, মাতুল পক্ষ, পিতৃ-মাতৃৰ আশীৰ্বাদ আৰু ঈশ্বৰৰ ওপৰত অটল বিশ্বাসে তেওঁক সদায় প্ৰেৰণা যোগাই আহিছে। কৌস্তুভৰ ভাষাত, “লক্ষ্য স্পষ্ট থাকিলে আৰু তাৰ সৈতে একাগ্ৰতা, অধ্যৱসায় আৰু মনোবল জড়িত থাকিলে কোনো বাধাই সফলতাৰ পথ ৰুদ্ধ কৰিব নোৱাৰে।”

‘বৰ্ষশ্ৰেষ্ঠ সংবাদদাতা—২০২৬’

সন্মানলৈ নিৰ্বাচিত নাজিৰাৰ যুৱ সাংবাদিক নয়নমণি ভৰদ্বাজ ফুকন

নাজিৰাৰ উদীয়মান যুৱ সাংবাদিক নয়নমণি ভৰদ্বাজ ফুকন সংবাদ জগতলৈ আগবঢ়োৱা উল্লেখযোগ্য অৱদানৰ স্বীকৃতিস্বৰূপে ‘বৰ্ষশ্ৰেষ্ঠ সংবাদদাতা—২০২৬’ সন্মানৰ বাবে নিৰ্বাচিত হৈছে। অসম ৰিপৰ্ট ২৪-৭ সংবাদ প্ৰতিষ্ঠানে প্ৰদান কৰা এই সন্মানে তেওঁৰ সাংবাদিক জীৱনলৈ এক নতুন সংযোজন ঘটোৱাৰ লগতে নাজিৰাৰ নামো গৌৰৱান্বিত কৰিছে।

প্ৰায় ছয় বছৰ পূৰ্বে এখন অনলাইন সংবাদ মাধ্যমৰ জৰিয়তে সাংবাদিকতা জীৱনৰ শুভাৰম্ভ কৰা নয়নমণি ভৰদ্বাজ ফুকনে অতি কম সময়ৰ ভিতৰতে নিজৰ নিষ্ঠা, সত্যনিষ্ঠা আৰু দায়িত্বশীল প্ৰতিবেদনৰ জৰিয়তে সংবাদ জগতত এক সুকীয়া পৰিচয় গঢ়ি তুলিবলৈ সক্ষম হৈছে। পৰৱৰ্তী সময়ত গুৱাহাটীৰ পৰা প্ৰকাশিত সাপ্তাহিক ‘জাৰ্নেলিষ্ট বাৰ্তা’ কাকতৰ সংবাদদাতা হিচাপে তেওঁ নাজিৰা অঞ্চলৰ সামাজিক, ৰাজনৈতিক আৰু উন্নয়নমূলক বিভিন্ন বিষয়ত নিয়মীয়াকৈ বাতৰি পৰিৱেশন কৰি পাঠকৰ আস্থা লাভ কৰে। বৰ্তমান তেওঁ অসমীয়াৰ লগতে ৰাষ্ট্ৰীয় ভাষা হিন্দীত প্ৰকাশিত ‘জন জন বিচাৰ’ দৈনিকৰ সংবাদদাতা হিচাপে দায়িত্ব পালন কৰি আহিছে। ইয়াৰ উপৰিও একাধিক অসমীয়া আৰু হিন্দী ভাষাৰ বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমৰ সৈতেও তেওঁ সক্ৰিয়ভাৱে জড়িত হৈ আছে। অসম ৰিপৰ্ট ২৪ ৭-ৰ দ্বিতীয় প্ৰতিষ্ঠা দিৱস উপলক্ষে অহা ৮ আগষ্টত গুৱাহাটীত অনুষ্ঠিত হ’বলগীয়া বিশেষ অনুষ্ঠানত নয়নমণি ভৰদ্বাজ ফুকনৰ হাতত এই সন্মান আনুষ্ঠানিকভাৱে অৰ্পণ কৰা হ’ব। উক্ত অনুষ্ঠানত সমাজসেৱা, সাংবাদিকতা আৰু বিভিন্ন ক্ষেত্ৰত বিশেষ অৱদান আগবঢ়োৱা বহু বিশিষ্ট ব্যক্তি আৰু সংবাদকৰ্মীকো বিভিন্ন সন্মান আৰু বঁটাৰে সম্বৰ্ধনা জনোৱা হ’ব। এই সন্মান লাভৰ খবৰে নাজিৰা অঞ্চলৰ সাংবাদিক মহল, শুভাকাংক্ষী আৰু সচেতন নাগৰিকসকলৰ মাজত আনন্দৰ বতৰা কঢ়িয়াই আনিছে। বস্তুতে এই সাফল্যক নৱপ্ৰজন্মৰ সাংবাদিকসকলৰ বাবে এক অনুপ্ৰেৰণাদায়ক দৃষ্টান্ত বুলি অভিহিত কৰিছে।

বোকাখাতত ১,৪১২ গৰাকী মেধাৱী শিক্ষাৰ্থীক সম্বৰ্ধনা

অসমৰ মন্ত্ৰী তথা বোকাখাতৰ বিধায়ক অতুল বৰাই শনিবাৰে বোকাখাত উচ্চতৰ মাধ্যমিক বিদ্যালয়ৰ মুক্ত মঞ্চত আয়োজিত অনুষ্ঠানত ২০২৬ বৰ্ষৰ হাইস্কুল শিক্ষান্ত পৰীক্ষা আৰু উচ্চতৰ মাধ্যমিক পৰীক্ষাত কৃতিত্ব অৰ্জন কৰা ১,৪১২ গৰাকী মেধাৱী শিক্ষাৰ্থীক সম্বৰ্ধনা জনায়। ইয়াৰে ৮১১গৰাকী হাইস্কুল শিক্ষান্ত আৰু ৬০১গৰাকী উচ্চতৰ মাধ্যমিকৰ শিক্ষাৰ্থী। চিকিৎসা শিক্ষাৰ ৰাষ্ট্ৰীয় প্ৰৱেশ পৰীক্ষাত (নীট) উত্তীৰ্ণ হোৱা শিক্ষাৰ্থীসকলকো এই অনুষ্ঠানত বিশেষভাৱে সম্বৰ্ধনা জনোৱা হয়।

অনুষ্ঠানত ভাষণ প্ৰদান কৰি অতুল বৰাই কয় যে বোকাখাতৰ মেধাৱী যুৱ-প্ৰজন্মই সমষ্টিটোৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ সম্পদ। তেওঁ শিক্ষাৰ্থীসকলক জ্ঞান, শৃংখলা, সততা, মানৱীয় মূল্যবোধ আৰু অধ্যৱসায়েৰে আগবাঢ়ি সমাজ, অসম আৰু দেশৰ উন্নয়নত অৰিহণা যোগাবলৈ আহ্বান জনায়। অনুষ্ঠানত মন্ত্ৰী কেশৱ মহন্ত, জয়ন্ত মল্ল বৰুৱা, ৰাজ্যসভাৰ সাংসদ কামাখ্যা প্ৰসাদ তাছাৰ লগতে বহু বিশিষ্ট ব্যক্তি উপস্থিত থাকে।

ইউনাইটেড বড়ো পিপলছ অৰ্গেনাইজেশ্যনৰ ১৩সংখ্যক প্ৰতিষ্ঠা দিৱস পালন

অসমৰ শিক্ষা মন্ত্ৰী ডাঃ ৰণোজ পেগুৱে শনিবাৰে মালিগাঁৱৰ বিষ্ণুপ্ৰসাদ ৰাভা ভৱনত অনুষ্ঠিত ইউনাইটেড বড়ো পিপলছ অৰ্গেনাইজেশ্যন (ইউবিপিঅ’)-ৰ ১৩সংখ্যক প্ৰতিষ্ঠা দিৱসৰ অনুষ্ঠানত অংশগ্ৰহণ কৰে। অনুষ্ঠানত মন্ত্ৰী বিশ্বজিৎ দৈমাৰীয়েও উপস্থিত থাকে। শিক্ষা মন্ত্ৰীগৰাকীয়ে বড়োলেণ্ড ভূখণ্ডীয় অঞ্চল (বিটিআৰ)ৰ বাহিৰত বসবাস কৰা বড়ো জনগোষ্ঠীক ঐক্যবদ্ধ কৰাৰ লগতে তেওঁলোকৰ সামাজিক, শৈক্ষিক, সাংস্কৃতিক আৰু আৰ্থিক উন্নয়নৰ ক্ষেত্ৰত ইউবিপিঅ’ই আগবঢ়োৱা অৱদানৰ শলাগ লয়। ২০১৪ চনত গঠিত এই সংগঠনটোৱে বড়ো-কছাৰী কল্যাণ স্বায়ত্তশাসিত পৰিষদ (বিকেডব্লিউএচি) গঠনত আগবঢ়োৱা ভূমিকাৰো প্ৰশংসা কৰি মন্ত্ৰীগৰাকীয়ে আগন্তুক দিনতো সংগঠনটোৱে বড়ো-কছাৰী সমাজৰ সৰ্বাংগীন উন্নয়ন আৰু সমৃদ্ধ, সমন্বিত অসম গঢ়াৰ ক্ষেত্ৰত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰিব বুলি আশা প্ৰকাশ কৰে।

নীতি আয়োগৰ বিনিয়োগ-অনুকূল সূচকত অসমৰ অগ্ৰগতি

মুখ্যমন্ত্ৰী ড° হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই জানিবলৈ দিয়ে যে নীতি আয়োগৰ ‘বিনিয়োগ-অনুকূল সূচক’ত অসমে অগ্ৰণী ৰাজ্যসমূহৰ ভিতৰত স্থান লাভ কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। পাহাৰীয়া আৰু উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলীয় ৰাজ্যসমূহৰ ভিতৰত অসমক দ্বিতীয় শ্ৰেষ্ঠ বিনিয়োগ গন্তব্য হিচাপেও স্বীকৃতি দিয়া হৈছে। মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে কয় যে উদ্যোগ-অনুকূল নীতি, উন্নত আন্তঃগাঁথনি, সুদৃঢ় আইন-শৃংখলা, অনুকূল প্ৰতিষ্ঠানগত পৰিৱেশ, উন্নত যোগাযোগ ব্যৱস্থা, শ্ৰম-সংক্ৰান্তীয় স্থিতিশীলতা আৰু শিক্ষা খণ্ডত অব্যাহত বিনিয়োগে অসমক বিনিয়োগকাৰীৰ বাবে অধিক আকৰ্ষণীয় কৰি তুলিছে। তেওঁ দেশ-বিদেশৰ উদ্যোগপতি আৰু বিনিয়োগকাৰীসকলক অসমত বিনিয়োগ কৰিবলৈ আহ্বান জনাই কয় যে ৰাজ্য চৰকাৰে উন্নত ব্যৱসায়িক পৰিৱেশ গঢ়ি তুলি অধিক বিনিয়োগ আকৰ্ষণ, অৰ্থনৈতিক বিকাশ আৰু নিয়োগ সৃষ্টিৰ বাবে প্ৰতিশ্ৰুতিবদ্ধ।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

২৪ জুলাই, ২০২৬ৰ পৰা ৩০ জুলাই, ২০২৬লৈ

মেষ ঃ ভ্ৰমণৰ পৰা আনন্দ লাভ হ’ব। সুখ-শান্তি বৃদ্ধি পাব। খং-ৰাগ আৰু মানসিক উদ্বিগ্নতাৰ ওপৰত নিয়ন্ত্ৰণ ৰাখক।

বৃষ ঃ আকস্মিক কোনো শুভ সংবাদে মন আনন্দিত কৰিব পাৰে। ধৰ্মীয় কাৰ্যত মনোনিবেশ থাকিব। বাৰ্তা বিনিময়ৰ ক্ষেত্ৰত সতৰ্কতা অৱলম্বন কৰক।

মিথুন ঃ কৰ্মদক্ষতাৰ বাবে সুনাম অৰ্জন কৰিব। দৈনন্দিন কৰ্মব্যস্ততা বৃদ্ধি পাব। মানসিক অস্থিৰতা অনুভৱ কৰিব পাৰে।

কৰ্কট ঃ শৰীৰৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হওক। ব্যৱসায়-বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ হ’ব। ব্যয় বৃদ্ধি পোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

সিংহ ঃ অজ্ঞাত কোনো সংশয়ে মন চিন্তিত কৰি ৰাখিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ হ’ব। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবেও সময় অনুকূল।

কন্যা ঃ চেষ্টাৰ সফলতা লাভ কৰিব। মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। সন্তানৰ সুনাম বৃদ্ধি পাব।

তুলা ঃ আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ হ’ব। চেষ্টাৰ সফলতা থাকিব। মানসিক সুখ-শান্তি বৃদ্ধি পাব।

বৃশ্চিক ঃ মানসিক সুখ-শান্তি আৰু আনন্দ-ফূৰ্তিৰে সময় পাৰ হ’ব। অদৰকাৰী বাদ-বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। চেষ্টা আৰু পৰাক্ৰমৰ সমাদৰ লাভ কৰিব।

ধনু ঃ শৰীৰৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হওক। আকস্মিক কোনো খবৰে মানসিক অস্থিৰতা আনিব পাৰে। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ হ’ব।

মকৰ ঃ সামাজিক ক্ষেত্ৰৰ পৰা লাভ হ’ব। তীৰ্থস্থান ভ্ৰমণৰ সুযোগ লাভ কৰিব পাৰে। সুখ্যাতি অৰ্জন কৰিব।

কুম্ভ ঃ কৰ্মক্ষেত্ৰত সুনাম বৃদ্ধি পাব। দৰকাৰী সিদ্ধান্ত সাৱধানে লওক। খৰচ বৃদ্ধি পোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে। কৰ্মক্ষেত্ৰত সফলতা লাভ কৰিব।

মীন ঃ নতুন পৰিকল্পনাত সফলতা লাভৰ সম্ভাৱনা আছে। পৰিয়ালত সুখ-শান্তি বজাই থাকিব। আৰ্থিক দিশত উন্নতিৰ যোগ দেখা যায়। কৰ্মক্ষেত্ৰত দায়িত্ব বৃদ্ধি পাব। অদৰকাৰী চিন্তা পৰিহাৰ কৰি ধৈৰ্য ধৰি আগবাঢ়ক।

- হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

দৰিদ্ৰ কৃষকৰ পুত্ৰৰ উজ্জ্বল সাফল্য ঃ নীটত ৬১০ নম্বৰ লাভ কৰি সৰ্বভাৰতীয় স্থান ৭,৩২০

কঠোৰ পৰিশ্ৰম, অধ্যৱসায় আৰু অদম্য মনোবলে দাৰিদ্ৰকো জয় কৰিব পাৰে-এই কথাকে পুনৰ সত্য প্ৰমাণ কৰিলে তিনিচুকীয়া জিলাৰ মাৰ্ঘেৰিটাৰ কেটেটং ২ নং নাকাং পথাৰৰ কৃষক পৰিয়ালৰ সন্তান বিশু লিম্বুৱে। ২০২৬ বৰ্ষৰ চিকিৎসা শিক্ষাৰ ৰাষ্ট্ৰীয় প্ৰৱেশ পৰীক্ষা (নীট)-ত তেওঁ ৬১০ নম্বৰ লাভ কৰি সৰ্বভাৰতীয় স্থান (এআইআৰ) ৭,৩২০ দখল কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে।

বিশু লিম্বু ক্ষুদ্ৰ কৃষক ফৌদ লিম্বু আৰু অম কুমাৰী লিম্বুৰ পুত্ৰ। আৰ্থিক অনাটনৰ মাজতো তেওঁ শিক্ষাৰ প্ৰতি একাগ্ৰতা বজাই ৰাখি সকলো বাধা অতিক্ৰম কৰি এই সাফল্য অৰ্জন কৰিছে। তেওঁৰ এই কৃতিত্বই কেৱল পৰিয়ালটোকেই নহয়, সমগ্ৰ মাৰ্ঘেৰিটা অঞ্চললৈও গৌৰৱ কঢ়িয়াই আনিছে। স্থানীয় বাসিন্দাসকলে দৰিদ্ৰ পৰিয়ালৰ শিক্ষাৰ্থীসকলৰ বাবে বিশুক এক অনুপ্ৰেৰণাৰ উৎস আৰু নতুন প্ৰজন্মৰ আদৰ্শ হিচাপে অভিহিত কৰিছে। ফলাফল প্ৰকাশৰ পাছত বিশুৱে এই সফলতাৰ বাবে পিতৃ-মাতৃ আৰু সকলো শুভাকাংক্ষীৰ প্ৰতি কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰি ভৱিষ্যতে চিকিৎসক হিচাপে সমাজসেৱা কৰাৰ লক্ষ্য ব্যক্ত কৰে।

মণিপুৰত সন্দেহজনক বিস্ফোৰণত বেইলী দলং উৰি গল

জন জন বিচাৰ
...✍ইম্ফল

মণিপুৰৰ কামজং জিলাত এক সন্দেহজনক তাৎক্ষণিকভাৱে প্ৰস্তুত কৰা বিস্ফোৰক (আইইডি) বিস্ফোৰণত এখন বেইলী দলং সম্পূৰ্ণৰূপে ধ্বংস হোৱাৰ ফলত ১০ খনতকৈ অধিক গাঁওৰ সৈতে জিলা সদৰৰ স্থল যোগাযোগ সম্পূৰ্ণৰূপে বিচ্ছিন্ন হৈ পৰিছে। ঘটনাটোক কেন্দ্ৰ কৰি আৰক্ষীয়ে ব্যাপক তদন্ত আৰম্ভ কৰিছে।

আৰক্ষীৰ তথ্য অনুসৰি, মঙলবাৰে নিশা প্ৰায় ৯.৩০ বজাত ফাংগে আৰু চাট্রিক গাঁৱৰ মাজেৰে নামবান লক নদীৰ ওপৰত থকা বেইলী দলংখনত এই বিস্ফোৰণ সংঘটিত হয়। বিস্ফোৰণত দলংখন গুৰুতৰভাৱে ক্ষতিগ্ৰস্ত হয়। একে সময়তে নদীৰ পাৰত ৰখাই থোৱা দূৰসংযোগ বিভাগৰ এখন পিক-আপ বাহনতো অজ্ঞাত দুষ্কৃতিকাৰীয়ে অগ্নিসংযোগ কৰে।

প্ৰধানমন্ত্ৰী গ্ৰাম সড়ক যোজনা (PMGSY)-ৰ অধীনত নিৰ্মাণ কৰা এই দলংখনেই আছিল সাহামফুং উন্নয়ন খণ্ড আৰু কামজং জিলা সদৰৰ মাজৰ মুখ্য সংযোগপথ। লগতে চাট্রিককে ধৰি ১০ খনতকৈ অধিক গাঁওৰ বাবে এইখনেই আছিল একমাত্ৰ স্থল যোগাযোগৰ মাধ্যম। দলং ধ্বংস হোৱাৰ ফলত হাজাৰ হাজাৰ

বাসিন্দাই চিকিৎসা, শিক্ষা, বজাৰ আৰু চৰকাৰী সেৱালৈ যাতায়াতত ব্যাপক সমস্যাৰ সন্মুখীন হৈছে।

আৰক্ষীয়ে স্বতঃপ্ৰণোদিতভাৱে গোচৰ ৰুজু কৰি তদন্ত আৰম্ভ কৰিছে। প্ৰাথমিক অনুসন্ধানত এই আক্ৰমণৰ লক্ষ্য আছিল গুৰুত্বপূৰ্ণ ৰাজহুৱা আন্তঃগাঁথনি ধ্বংস কৰি যোগাযোগ ব্যৱস্থা ব্যাহত কৰা, সাধাৰণ লোকৰ চলাচলত বাধা সৃষ্টি কৰা আৰু অঞ্চলটোত আতংকৰ পৰিৱেশ গঢ়ি তোলা।

ঘটনাস্থলীৰ পৰা নীলা প্লাষ্টিকৰ ত্ৰিপলৰ ওপৰত বিস্ফোৰকৰ অৱশিষ্ট বুলি সন্দেহ কৰা কিছু সামগ্ৰী উদ্ধাৰ কৰা হৈছে। অৱশ্যে আৰক্ষীয়ে এতিয়াও উদ্ধাৰ হোৱা সামগ্ৰীৰ প্ৰকৃতি আনুষ্ঠানিকভাৱে নিশ্চিত কৰা নাই।

ইফালে, কিছুমান স্থানীয় বাসিন্দাই এই ঘটনাৰ বাবে কুকি উগ্ৰপন্থী গোটক দায়ী কৰিছে। কিন্তু এই অভিযোগৰ স্বতন্ত্ৰ সত্যতা এতিয়ালৈকে প্ৰতিপন্ন হোৱা নাই আৰু কোনো সংগঠনেও এই বিস্ফোৰণৰ দায় স্বীকাৰ কৰা নাই।

আনহাতে, 'খনুইথট-খন' (নাগা যুৱক-যুৱতীৰ কণ্ঠ) নামৰ সংগঠনটোৱে দলং ধ্বংসৰ তীব্ৰ নিন্দা কৰি এই পথটোক উখৰুল আৰু ইম্ফল সংযোগৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ বিকল্প জীৱনৰেখা বুলি অভিহিত কৰিছে। সংগঠনটোৱে ঘটনাটোৰ ন্যায়িক অথবা স্বতন্ত্ৰ তদন্তৰ দাবী জনাইছে। লগতে দোষীক ৰক্ষণাবেক্ষণ বা তদন্তত বিলম্ব ঘটিলে আইন-শৃংখলাৰ ওপৰত জনসাধাৰণৰ আস্থা অধিক ক্ষুণ্ণ হ'ব বুলিও সতৰ্কবাণী উচ্চাৰণ কৰিছে। বৰ্তমান ধ্বংসপ্ৰাপ্ত দলংখন পুনৰ নিৰ্মাণ আৰু বিচ্ছিন্ন হৈ পৰা গাঁওসমূহৰ যোগাযোগ ব্যৱস্থা পুনৰ স্বাভাৱিক কৰাৰ দাবী অঞ্চলজুৰি তীব্ৰ হৈ উঠিছে।

'শান্তি প্ৰতিষ্ঠাৰ প্ৰচেষ্টা বিফল কৰিবলৈ অপশক্তিৰ ষড়যন্ত্ৰ'

জন জন বিচাৰ
...✍ইম্ফল

প্ৰায় তিনি বছৰ ধৰি জাতিগত সংঘাতৰ জুইত জ্বলন্ত মণিপুৰত শান্তি আৰু সম্প্ৰীতি পুনৰ প্ৰতিষ্ঠাৰ বাবে ৰাজ্য চৰকাৰে অব্যাহতভাৱে প্ৰচেষ্টা চলাই থকাৰ সময়তে কিছুমান স্বাৰ্থান্বেষী গোটে এই প্ৰচেষ্টাক বিফল কৰাৰ অপচেষ্টা চলাইছে বুলি অভিযোগ উত্থাপন কৰিছে মুখ্যমন্ত্ৰী যুমনাম খেমচন্দ সিঙে।

শনিবাৰে থৌবাল জিলাৰ লিলঙত অনুষ্ঠিত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ মণ্ডল পৰ্যায়ৰ কৰ্মী সন্মিলনত ভাষণ দি মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে কয়, সংঘাতৰ ফলত ক্ষতিগ্ৰস্ত বিভিন্ন জনগোষ্ঠীৰ মাজত পুনৰ আস্থা গঢ়ি তুলি ৰাজ্যখনত স্থায়ী শান্তি প্ৰতিষ্ঠা কৰাটোৱেই চৰকাৰৰ সৰ্বোচ্চ অগ্ৰাধিকাৰ।

তেওঁ জনায় যে জিৰিবাম জিলাত স্থানচ্যুত পৰিয়ালসমূহৰ সৈতে সাক্ষাৎ কৰাৰ লগতে মেইতেই, হামাৰ, কুকি, পাইতে, মেইতেই মুছলমান আৰু ৰংমেই নাগা জনগোষ্ঠীৰ প্ৰতিনিধিসকলৰ সৈতেও মতবিনিময় কৰিছে। এই সম্প্ৰীতিৰ প্ৰচেষ্টাৰ ফলত বিভিন্ন সম্প্ৰদায়ৰ লোক একেলগে ভোজন কৰি শান্তিপূৰ্ণভাৱে বসবাস কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে বুলি তেওঁ উল্লেখ কৰে।

কিন্তু বিষ্ণুপুৰ জিলাৰ ত্ৰংলাওবি বিস্ফোৰণত দুটা শিশুৰ মৃত্যুৰ ঘটনাই শান্তি প্ৰতিষ্ঠাৰ প্ৰচেষ্টাত সাময়িক বাধাৰ সৃষ্টি কৰা বুলি উল্লেখ কৰি মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে কয়, কিছুমান অপশক্তিয়ে সচেতনভাৱে ৰাজ্যখনত স্বাভাৱিক পৰিস্থিতি ঘূৰাই অনাৰ প্ৰচেষ্টাক বিফল কৰিবলৈ চেষ্টা চলাইছে। এনে ষড়যন্ত্ৰ কেতিয়াও সফল নহ'ব বুলিও তেওঁ দৃঢ়ভাৱে মন্তব্য কৰে।

মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে মণিপুৰৰ প্ৰাক্তন মুখ্যমন্ত্ৰী মহম্মদ আলিমুদ্দিনক স্মৰণ কৰি কয় যে সকলো জনগোষ্ঠীৰ মাজত শান্তিপূৰ্ণ সহাৱস্থানৰ আদৰ্শ তেওঁ আগবঢ়াই গৈছিল আৰু সেই আদৰ্শই আজিও ৰাজ্যখনৰ বাবে পথপ্ৰদৰ্শক।

তেওঁ লগতে স্পষ্ট কৰে যে সংঘাতপ্ৰৱণ অঞ্চলসমূহলৈ আগন্তুক দিনতো তেওঁ নিজেই ভ্ৰমণ অব্যাহত ৰাখিব। ৰাজ্যখনত স্থায়ী শান্তি, সম্প্ৰীতি আৰু স্বাভাৱিক পৰিৱেশ পুনৰ ঘূৰাই অনাটোৱেই চৰকাৰৰ মুখ্য দায়িত্ব বুলি তেওঁ পুনৰ দোহাৰে।

দিখৌৰ মথাউৰিৰ ভয়াৱহ খহনীয়া নাজিৰাত বৃহৎ বিপদৰ আশংকা

নিৰ্বিকাৰ বিভাগীয় কৰ্তৃপক্ষ, ৰাইজেই বন্ধ কৰিলে চাৰিচকীয়া বাহনৰ চলাচল

এফালে ধাৰাসাৰ বৰষুণে সৃষ্টি কৰা কৃত্ৰিম বানপানী, আনফালে দিখৌ নদীৰ বাঢ়নী পানীয়ে নাজিৰা অঞ্চললৈ কঢ়িয়াই আনিছে এক নতুন সংকট। দিখৌ নদীৰ পাৰৰ মথাউৰিত দ্ৰুতগতিত বৃদ্ধি পোৱা খহনীয়াই এতিয়া নাজিৰা নগৰ আৰু কাষৰীয়া অঞ্চলৰ বাসিন্দাসকলক গভীৰ উদ্বিগ্ন কৰি তুলিছে। বিশেষকৈ নাজিৰা নগৰৰ ৭ নং ৱাৰ্ডৰ আমোলাপট্টি অঞ্চলত দিখৌ নদীৰ মথাউৰিৰ একাংশ চপৰা চপৰে খহি পৰাত যিকোনো মুহূৰ্তত ডাঙৰ দুৰ্যোগ সংঘটিত হোৱাৰ আশংকা বৃদ্ধি পাইছে। খহনীয়াই ক্ৰমাৎ পথৰ কাষ চাপি অহাত স্থানীয় লোকসকলে জীৱন আৰু সম্পত্তিৰ সুৰক্ষাক লৈ শংকিত হৈ পৰিছে। অভিযোগ অনুসৰি, স্থানীয় ৰাইজে একাধিকবাৰ জলসম্পদ বিভাগ আৰু সংশ্লিষ্ট কৰ্তৃপক্ষৰ ওচৰত খহনীয়া ৰোধৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ দাবী জনাই আহিছে। কিন্তু এতিয়ালৈকে কোনো ফলপ্ৰসু পদক্ষেপ গ্ৰহণ নকৰাত ক্ষোভ বৃদ্ধি পাইছে। শেহতীয়া ধাৰাসাৰ বৰষুণৰ ফলত দিখৌ নদীৰ জলস্তৰ দ্ৰুতগতিত বৃদ্ধি পোৱাৰ লগে লগে খহনীয়াও অধিক ভয়াৱহ ৰূপ ধাৰণ কৰিছে। পৰিস্থিতি ইমানেই সংকটজনক হৈ পৰিছে যে সম্ভাব্য দুৰ্ঘটনা এৰাবলৈ স্থানীয় ৰাইজে নিজ উদ্যোগত দিখৌৰ মথাউৰিৰ ওপৰেৰে চাৰিচকীয়া বাহনৰ চলাচল সম্পূৰ্ণৰূপে বন্ধ কৰি দিয়ে। জনসাধাৰণৰ এই পদক্ষেপেই প্ৰমাণ কৰে যে বিপদৰ আশংকা কিমান গভীৰ। স্থানীয় বাসিন্দাসকলে অভিযোগ কৰিছে যে কোনো অপ্ৰীতিকৰ ঘটনা সংঘটিত হোৱাৰ পিছত নহয়, তাৰ পূৰ্বেই চৰকাৰে আৰু বিভাগীয় কৰ্তৃপক্ষই যুদ্ধকালীন তৎপৰতাৰে খহনীয়া প্ৰতিৰোধৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিব লাগে। অন্যথা, মথাউৰি ভাঙি যোৱাৰ ফলত নাজিৰা নগৰ আৰু ইয়াৰ বিস্তীৰ্ণ অঞ্চলত বৃহৎ ক্ষয়-ক্ষতিৰ আশংকা নুই কৰিব নোৱাৰি।

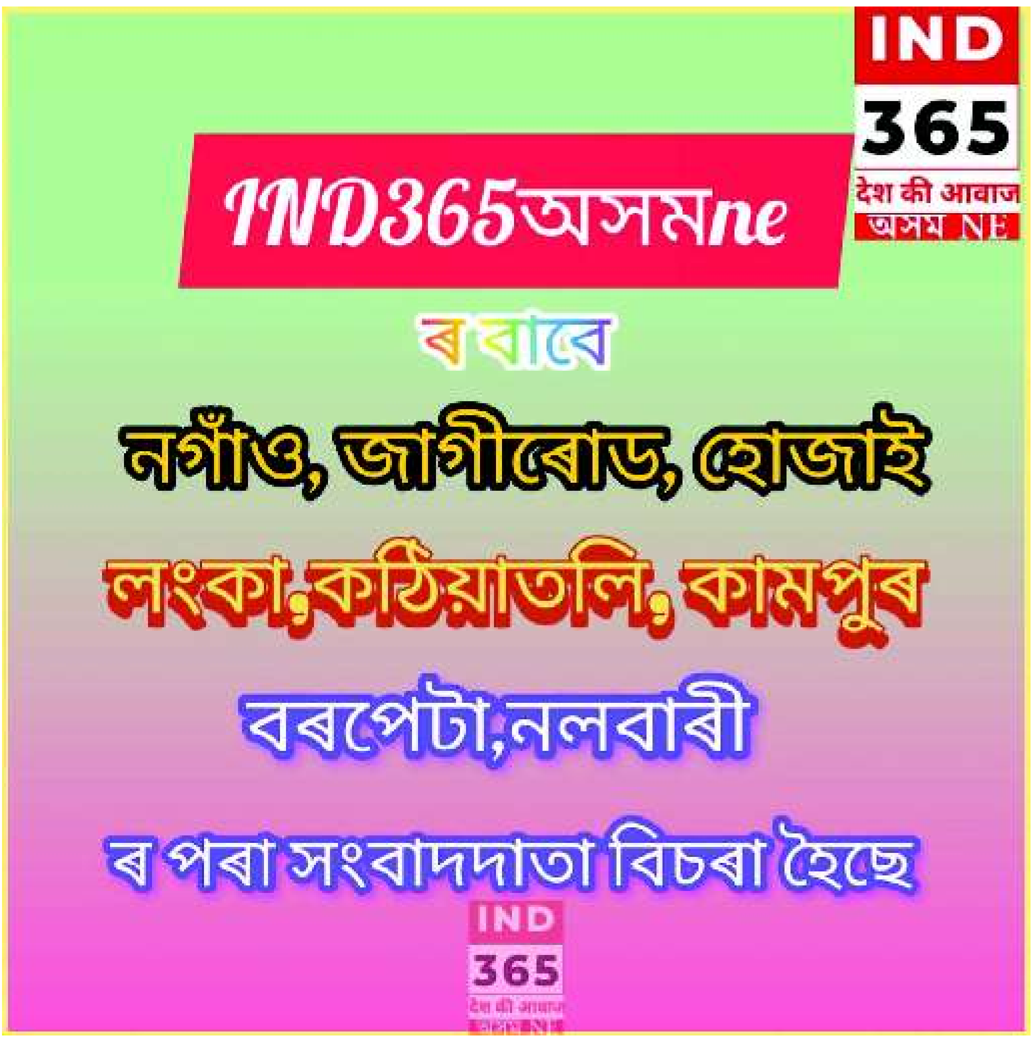

সম্পাদকীয়

ছাত্ৰৰ অধিকাৰ নে ৰাজনৈতিক সুযোগ

দেশৰ লাখ লাখ শিক্ষাৰ্থীৰ ভৱিষ্যতৰ সৈতে জড়িত NEET-UG প্ৰশ্নকাকত ফাদিল কাণ্ড এতিয়া কেৱল শিক্ষাব্যৱস্থাৰ সংকট নহয়, ই ভাৰতীয় গণতন্ত্ৰৰ জবাবদিহিতাৰো এক কঠিন পৰীক্ষা হৈ পৰিছে। এই পৰিস্থিতিত কংগ্ৰেছ নেতা তথা লোকসভাৰ বিৰোধী দলপতি ৰাহুল গান্ধীয়ে লোক কল্যাণ মাৰ্গত প্ৰতিবাদত অংশগ্ৰহণ কৰি কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰক কঠোৰভাৱে সমালোচনা কৰিছে। তেওঁৰ যুক্তি-যেতিয়া দেশজুৰি ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকল ৰাজপথত নামিছে, তেতিয়া বিৰোধী দল সংসদৰ চাৰিদেৱালৰ মাজত নীৰৱ হৈ থাকিব নোৱাৰে।

কিন্তু ইয়াত মূল প্ৰশ্ন আনটো। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ ন্যায্য দাবীক ৰাজনৈতিক সমৰ্থন দিয়াটো গণতান্ত্ৰিক অধিকাৰ। কিন্তু সেই দাবীক ৰাজনৈতিক লাভৰ অস্ত্ৰত পৰিণত কৰাটোও সমানেই বিপজ্জনক। যদি ৰাজপথৰ প্ৰতিবাদ কেৱল চৰকাৰ পতনৰ শ্লোগানলৈ সীমাবদ্ধ হৈ পৰে আৰু পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ সংস্কাৰৰ বাস্তৱ সমাধান পিছুৱাই যায়, তেন্তে ক্ষতি হ'ব শিক্ষাৰ্থীৰেই।

ৰাহুল গান্ধীয়ে শিক্ষামন্ত্ৰী ধৰ্মেন্দ্ৰ প্ৰধানৰ পদত্যাগ দাবী কৰিছে আৰু তেওঁক সমগ্ৰ ব্যৱস্থাৰ ব্যৰ্থতাৰ প্ৰতীক বুলি অভিহিত কৰিছে। আনহাতে কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে এই অভিযোগ নাকচ কৰি তদন্ত আৰু ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ কথা কৈ আহিছে। গণতন্ত্ৰত পদত্যাগ দাবী কৰাটো বিৰোধীৰ অধিকাৰ, কিন্তু কেৱল এজন মন্ত্ৰীৰ পদত্যাগে প্ৰশ্নকাকত ফাদিল, পৰীক্ষা মাফিয়া আৰু ব্যৱস্থাগত দুৰ্নীতিৰ সমস্যাৰ স্থায়ী সমাধান দিব নোৱাৰে।

ইয়াত চৰকাৰৰ ভূমিকাও প্ৰশ্নৰ উৰ্ধ্বত নহয়। সংসদত এনে এক স্পৰ্শকাতৰ বিষয়ত বিস্তৃত আলোচনা নোহোৱাটো অস্বস্তিকৰ। যেতিয়া লাখ লাখ পৰীক্ষাৰ্থীৰ ভৱিষ্যৎ অনিশ্চয়তাৰ সন্মুখীন, তেতিয়া সংসদে নিশ্চয় ৰাজনৈতিক সংঘাতৰ মঞ্চ নহয়, সমাধানৰ মঞ্চ হ'ব লাগিছিল। আলোচনা এৰাই যোৱাই সন্দেহ আৰু অসন্তোষ বৃদ্ধি কৰে।

আনহাতে, বিৰোধী দলৰো দায়িত্ব কেৱল প্ৰতিবাদ সংগঠিত কৰাত সীমাবদ্ধ নহয়। পৰীক্ষা সংস্কাৰ, স্বচ্ছ নিয়োগ ব্যৱস্থা, ডিজিটেল সুৰক্ষা, স্বাধীন পৰীক্ষা নিয়ন্ত্ৰণ ব্যৱস্থা আৰু প্ৰশ্নকাকত সুৰক্ষাৰ দৰে বিষয়ত স্পষ্ট বিকল্প নীতি আগবঢ়োৱাটোও সমান গুৰুত্বপূৰ্ণ। ৰাজনীতিৰ উদ্দেশ্য যদি সমাধান হয়, তেন্তে প্ৰতিবাদৰ সৈতে বিকল্প পথো দেখুৱাব লাগিব।

আজিৰ ভাৰতৰ যুৱসমাজে শ্লোগান নহয়, নিদ্ৰশ্চয়তা বিচাৰে; আশ্বাস নহয়, বিশ্বাসযোগ্য ব্যৱস্থা বিচাৰে। ত্বড্ৰড্ৰথ্ব বিতৰ্কই পুনৰ এবাৰ প্ৰমাণ কৰিলে যে পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ ওপৰত আস্থা নষ্ট হক্সলে কেৱল এজন শিক্ষাৰ্থী নহয়, সমগ্ৰ ৰাষ্ট্ৰই ক্ষতিগ্ৰস্ত হয়।

সেয়েহে এই সংকটক চৰকাৰ-বিৰোধীৰ ক্ষমতাৰ লড়াইলৈ ৰদ্ৰূপান্তৰিত নকৰি, শিক্ষাৰ্থীৰ ভৱিষ্যৎ সুৰক্ষিত কৰাৰ এক জাতীয় অভিযান হিচাপে লক্সব লাগিব। কাৰণ ৰাজনীতিৰ জয়-পৰাজয় পাঁচ বছৰত এবাৰ নিৰ্ধাৰিত হয়, কিন্তু এজন শিক্ষাৰ্থীৰ হেৰুওৱা এটা বছৰ হয়তো কেতিয়াও ঘূৰি নাহে।

'বিক্ৰম-১': নতুন ভাৰতৰ মহাকাশ বিপ্লৱৰ স্বৰ্ণিল উৰণ

জন জন বিচাৰ
...✍ ললিত গাৰ্গ

ভাৰতৰ মহাকাশ অভিযানে পুনৰ এবাৰ ইতিহাস ৰচিছে। দেশৰ প্ৰথম ব্যক্তিগত কক্ষপথীয় ৰকেট 'বিক্ৰম-ৰ'-ৰ সফল উৎক্ষেপণে কেৱল এক বৈজ্ঞানিক সাফল্যই নহয়, বৰঞ্চ ভাৰতৰ আত্মবিশ্বাস, উদ্ভাৱনী শক্তি আৰু আত্মনিৰ্ভৰ উন্নয়নৰ এক নতুন যুগৰ সূচনা কৰিছে। শ্ৰীহৰিকোটাৰ সতীশ ধাৱন মহাকাশ কেন্দ্ৰৰ পৰা 'মিছন আগমন'ৰ অধীনত সম্পন্ন হোৱা এই উৎক্ষেপণে বিশ্বক স্পষ্ট বাৰ্তা দিছে-মহাকাশ বিজ্ঞান এতিয়া কেৱল চৰকাৰী প্ৰতিষ্ঠানৰ সীমাবদ্ধ ক্ষেত্ৰ নহয়; ভাৰতৰ ব্যক্তিগত উদ্যোগো বিশ্বমানৰ প্ৰতিযোগিতাত আগশাৰীত অৱস্থান ল'বলৈ সাজু।

ড° বিক্ৰম সাৰাভাইয়ে কেতিয়াবা কৈছিল, "উন্নয়নশীল দেশৰ বাবে মহাকাশ বিজ্ঞান বিলাসিতা নহয়, উন্নয়নৰ অপৰিহাৰ্য হাতিয়াৰ।" সেই সপোনক বাস্তৱ ৰূপ দিয়াৰ পথত 'বিক্ৰম-ৰ' এক ঐতিহাসিক মাইলৰ খুঁটি। স্কাইৰুট এৰক্সস্পেছে এই ৰকেটৰ নাম ড° সাৰাভাইৰ নামেৰে নামাকৰণ কৰি কেৱল এজন মহান বিজ্ঞানীক সন্মান জনোৱা নাই, বৰঞ্চ ভাৰতৰ বৈজ্ঞানিক ঐতিহ্যকো নতুন প্ৰজন্মৰ সৈতে সংযোগ কৰিছে।

'বিক্ৰম-ৰ'ৰ সাফল্যৰ তাৎপৰ্য কেৱল উৎক্ষেপণত সীমাবদ্ধ নহয়। সম্পূৰ্ণ কাৰ্বন কম্প'জিটেৰে নিৰ্মিত এই ৰকেট হালধীয়া, অধিক শক্তিশালী আৰু ব্যয়-সাশ্ৰয়ী। থ্ৰী-ডি প্ৰিণ্টিংৰ দৰে আধুনিক প্ৰযুক্তিৰ ব্যৱহাৰে ইয়াৰ উৎপাদন খৰচ যথেষ্ট হ্ৰাস কৰিছে। ফলস্বৰূপে, বিশ্বজুৰি ক্ষুদ্ৰ উপগ্ৰহ উৎক্ষেপণৰ ক্ৰমবৰ্ধমান বজাৰত ভাৰতৰ বাবে এক বিশাল অৰ্থনৈতিক সম্ভাৱনা সৃষ্টি হৈছে। যোগাযোগ, কৃষি, বতৰ পূৰ্বাভাস, দুৰ্যোগ ব্যৱস্থাপনা, কৃত্ৰিম বুদ্ধিমত্তা আৰু প্ৰতিৰক্ষাৰ দৰে ক্ষেত্ৰত ক্ষুদ্ৰ উপগ্ৰহৰ চাহিদা যিদৰে বৃদ্ধি পাইছে, তাত ভাৰত এক বিশ্বাসযোগ্য আৰু কম ব্যয়ৰ উৎক্ষেপণ কেন্দ্ৰ হিচাপে আত্মপ্ৰকাশ কৰিব পাৰে।

এই সফলতাৰ আঁৰত আছে চৰকাৰৰ দূৰদৰ্শী মহাকাশ নীতি। ব্যক্তিগত বিনিয়োগ, ষ্টাৰ্টআপ আৰু বিদেশী অংশীদাৰিত্বৰ বাবে মহাকাশ খণ্ড মুকলি কৰাৰ ফলত ভাৰতত এক নতুন 'স্পেছ-ইক'ছিষ্টেম' গঢ় লৈ উঠিছে। একালত যি দেশত ৰকেটৰ অংশ চাইকেল আৰু গৰুগাড়ীত কঢ়িয়াই নিয়া হৈছিল, সেই দেশেই আজি ব্যক্তিগত উদ্যোগৰ জৰিয়তে বিশ্ব মহাকাশ অৰ্থনীতিত নিজৰ শক্তিশালী উপস্থিতি জনাইছে। ই নতুন ভাৰতৰ আত্মবিশ্বাসৰ এক জীৱন্ত প্ৰতীক।

অৱশ্যে এই গৌৰৱৰ মাজতো কিছু গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰত্যাহ্বান আছে। বিশ্ব বজাৰত স্কাইৰুটক এতিয়া স্পেছএক্স, ৰকেট লেব আৰু চীনৰ ব্যক্তিগত মহাকাশ সংস্থাসমূহৰ দৰে শক্তিশালী প্ৰতিদ্বন্দ্বীৰ সৈতে প্ৰতিযোগিতা কৰিব লাগিব। একক সফল উৎক্ষেপণে স্থায়ী বিশ্বাস সৃষ্টি নকৰে; নিয়মিত, নিৰ্ভৰযোগ্য আৰু কম ব্যয়ৰ উৎক্ষেপণ সেৱাইহে বিশ্ববজাৰত স্থায়ী স্থান নিশ্চিত কৰিব।

ইয়াৰ সমান্তৰালভাৱে ইছৰোৰ সন্মুখত আন এক ডাঙৰ প্ৰত্যাহ্বান থিয় দিছে-যোগ্য বিজ্ঞানী আৰু গৱেষকসকলক ধৰি ৰখা। উন্নত বেতন, গৱেষণাৰ স্বাধীনতা, অত্যাধুনিক সুবিধা আৰু উদ্ভাৱনমুখী কৰ্মপৰিবেশৰ অভাৱত বহু প্ৰতিভাৱান বিজ্ঞানী ব্যক্তিগত খণ্ডলৈ ঢাপলি মেলিছে। এই ধাৰা অব্যাহত থাকিলে ইছৰোৰ দীৰ্ঘম্যাদী গৱেষণা আৰু কৌশলগত মহাকাশ অভিযান প্ৰভাৱিত হোৱাৰ আশংকা নুই কৰিব নোৱাৰি। সেয়েহে চৰকাৰে ইছৰোৰ মানৱ সম্পদ উন্নয়নক সমান গুৰুত্ব দিব লাগিব।

আনহাতে, ইছৰো আৰু ব্যক্তিগত উদ্যোগৰ মাজত প্ৰতিযোগিতাৰ সলনি সহযোগিতাৰ সম্পৰ্ক গঢ়ি তোলাটো সময়ৰ দাবী। আমেৰিকাত নাছা আৰু স্পেছএক্সে যিদৰে একেলগে মহাকাশ অভিযানক নতুন উচ্চতালৈ লৈ গৈছে, ভাৰততো সেই আৰ্হি অনুসৰণ কৰি ইছৰো আৰু ব্যক্তিগত কোম্পানীসমূহৰ সমন্বয়ে বিশ্ব মহাকাশ খণ্ডত ভাৰতক এক অগ্ৰণী শক্তি হিচাপে প্ৰতিষ্ঠা কৰিব পাৰে।

ভৱিষ্যতৰ মহাকাশ অৰ্থনীতিৰ নেতৃত্ব দিবলৈ হ'লে বিদ্যালয় আৰু বিশ্ববিদ্যালয় পৰ্যায়তে বিজ্ঞান আৰু মহাকাশ গৱেষণাৰ প্ৰতি আগ্ৰহ সৃষ্টি কৰাটোও সমানে জৰুৰী। প্ৰতিখন ৰাজ্যত স্পেছ টেকন'লজি উদ্ভাৱন কেন্দ্ৰ স্থাপন, বিশ্ববিদ্যালয়-উদ্যোগৰ গৱেষণা অংশীদাৰিত্ব, ছেউজীয়া প্ৰপালচন, পুনঃব্যৱহাৰযোগ্য ৰকেট প্ৰযুক্তি আৰু মহাকাশ আইন অধিক বিনিয়োগবান্ধৱ কৰাৰ দৰে পদক্ষেপে ভাৰতৰ যুৱ সমাজৰ বাবে নতুন সম্ভাৱনাৰ দুৱাৰ মুকলি কৰিব।

'বিক্ৰম-ৰ' কেৱল এখন ৰকেটৰ নাম নহয়; ই নতুন ভাৰতৰ বৈজ্ঞানিক আত্মবিশ্বাস, উদ্ভাৱনী শক্তি আৰু অদম্য সম্ভাৱনাৰ উৰন্ত প্ৰতীক। এই সফলতাই প্ৰমাণ কৰিছে-যেতিয়া সুদূৰপ্ৰসাৰী নীতি, প্ৰতিভা, উদ্যোগ আৰু জাতীয় সংকল্প একে দিশত আগবাঢ়ে, তেতিয়া আকাশো সীমা হৈ নাথাকে। 'বিক্ৰম-ৰ'ৰ এই স্বৰ্ণিল উৰণে ভাৰতক কেৱল মহাকাশলৈ নহয়, বিশ্বৰ আগশাৰীৰ মহাকাশ শক্তি হোৱাৰ দিশলৈও দৃঢ় পদক্ষেপেৰে আগুৱাই লৈ গৈছে।

চড়াৱা কেলেংকাৰি ঃ বেংকৰ ওপৰতেই সকলো দোষ

জন জন বিচাৰ
...✍নতুন দিল্লী

অযোধ্যাৰ শ্ৰীৰাম জন্মভূমি মন্দিৰৰ চড়াৱা ধনৰ গড়মিলক কেন্দ্ৰ কৰি সৃষ্টি হোৱা বিতৰ্কত এতিয়া নতুন ৰাজনৈতিক আৰু প্ৰশাসনিক প্ৰশ্ন উত্থাপিত হৈছে। শ্ৰীৰাম জন্মভূমি তীৰ্থ ক্ষেত্ৰ ট্ৰাষ্টৰ সাম্প্ৰতিক বৈঠকত ঘটনাটোৰ বাবে মূলতঃ ষ্টেট বেংক অৱ ইণ্ডিয়াৰ ওপৰত দায়িত্ব আৰোপ কৰা হয়। ট্ৰাষ্টৰ বিবৃতিত বেংকে চুক্তিৰ একাধিক শৰ্ত মানি নচলাৰ ফলতেই চড়াৱা গণনাত অনিয়ম সংঘটিত হোৱা বুলি উল্লেখ কৰা হৈছে।

কিন্তু এই সিদ্ধান্তই নতুন বিতৰ্কৰ জন্ম দিছে। বিশেষ তদন্তকাৰী দলৰ পূৰ্বৰ তদন্তত তৎকালীন ট্ৰাষ্ট সদস্য অনিল মিশ্ৰাই নিৰাপত্তা আৰু গণনা প্ৰক্ৰিয়াৰ একাধিক নিয়ম শিথিল কৰাৰ তথ্য পোহৰলৈ আহিছিল। তদন্তত এই শিথিলতাকেই চুৰিকাণ্ডৰ অন্যতম কাৰণ বুলি কোৱা হৈছিল। তথাপিও ট্ৰাষ্টৰ বৈঠকত অনিল মিশ্ৰা বা ট্ৰাষ্টৰ নিজা তদাৰকিৰ ত্ৰুটিৰ বিষয়ে কোনো আলোচনা নোহোৱাত বহুতে প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে।

ইয়াৰ উপৰিও বিশেষ তদন্তকাৰী দলে কিছুমান বেংক কৰ্মচাৰীৰ ভূমিকাকো সন্দেহজনক বুলি উল্লেখ কৰিছিল। যদিও আৰক্ষীয়ে তদন্ত অব্যাহত থকাৰ কথা কৈছে, এতিয়ালৈকে তেওঁলোকৰ বিৰুদ্ধে কোনো দৃশ্যমান ব্যৱস্থা লোৱা হোৱা নাই। আনহাতে, চড়াৱা গণনাৰ মূল অভিযুক্ত টিন্নু যাদৱৰ হাতত গণনা কক্ষ আৰু দানপাত্ৰৰ চাবি কিয় আছিল, সেই বিষয়েও বৈঠকত কোনো স্পষ্ট ব্যাখ্যা দিয়া হোৱা নাই।

চুৰিকাণ্ড পোহৰলৈ অহাৰ পিছত চম্পত ৰায় আৰু অনিল মিশ্ৰাৰ পদত্যাগ নিশ্চিত হৈছিল। বৰ্তমান ট্ৰাষ্টৰ অন্তৰৱৰ্তীকালীন মহাসচিব কৃষ্ণ মোহনৰ হাতত দায়িত্ব ন্যস্ত কৰা হৈছে। বৈঠকত ভৱিষ্যতে এনে ঘটনা ৰোধ কৰিবলৈ বেংকৰ সৈতে হোৱা চুক্তিৰ অধিক কঠোৰভাৱে কাৰ্যকৰী কৰা, নিয়ম অধিক শক্তিশালী কৰা আৰু বিত্ত সমিতিয়ে বেংক কৰ্তৃপক্ষৰ সৈতে শীঘ্ৰে বৈঠক অনুষ্ঠিত কৰাৰ সিদ্ধান্ত লোৱা হৈছে।

এই ঘটনাই কেৱল বেংকৰ দায়িত্বই নহয়, ট্ৰাষ্টৰ জবাবদিহিতাকো কেন্দ্ৰ কৰি এক গুৰুত্বপূৰ্ণ বিতৰ্ক উত্থাপন কৰিছে। তদন্ত সম্পূৰ্ণ নোহোৱালৈকে এই কেলেংকাৰিৰ বহু দিশ এতিয়াও উত্তৰহীন হৈ আছে।

আমি যদি তেল বিক্ৰী কৰিব নোৱাৰোঁ, তেন্তে আনেও নোৱাৰিব

আমেৰিকাক ইৰানৰ কড়া সকীয়নি

জন জন বিচাৰ
...✍নতুন দিল্লী

মধ্যপ্ৰাচ্যত ইৰান-আমেৰিকা সংঘাত অধিক তীব্ৰ ৰূপ ধাৰণ কৰাৰ আশংকাৰ মাজতে ইৰানৰ সংসদৰ অধ্যক্ষ মহম্মদ বাকেৰ গালিবাফে আমেৰিকাক কড়া সকীয়নি দিছে। তেওঁ স্পষ্টকৈ কৈছে, যদি ইৰানক আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় বজাৰত তেল বিক্ৰী কৰিবলৈ বাধা দিয়া হয়, তেন্তে অঞ্চলটোৰ আন কোনো দেশেও নিৰাপদে তেল ৰপ্তানি কৰিব নোৱাৰিব।

গালিবাফে সামাজিক মাধ্যমত লিখিছে, 'এই সংঘাতৰ সমীকৰণ স্পষ্ট-সকলো নহলে কোনো নহয়। যি অঞ্চলত ইৰানে তেল বিক্ৰী কৰিব নোৱাৰিব, সেই অঞ্চলত আনেও তেল বিক্ৰী কৰিব নোৱাৰিব। যদি আমাৰ সুৰক্ষা নিশ্চিত নহয়, তেন্তে কোনো গুৰুত্বপূৰ্ণ আন্তঃগাঁথনিও সুৰক্ষিত নাথাকিব।'

তেওঁ বিশেষকৈ হৰ্মুজ জলডমৰুমধ্যৰ প্ৰসংগ উত্থাপন কৰি কয় যে এই কৌশলগত সামুদ্ৰিক পথৰ সুৰক্ষা তেতিয়াহে নিশ্চিত হ'ব, যেতিয়া আমেৰিকাৰ সামৰিক উপস্থিতি তাত নাথাকিব। তেওঁৰ মতে, যুদ্ধৰ পূৰ্বৰ পৰিস্থিতিলৈ হৰ্মুজ পুনৰ ঘূৰি নাযায়।

গালিবাফৰ এই মন্তব্য আমেৰিকাৰ ৰাষ্ট্ৰপতি ডনাল্ড ট্ৰাম্পৰ শেহতীয়া কঠোৰ সতৰ্কবাণীৰ পিছতেই আহিছে। ট্ৰাম্পে ঘোষণা কৰিছিল যে যদি ইৰানে হৰ্মুজ জলডমৰুমধ্যত কোনো জাহাজত ক্ষেপণাস্ত্ৰ বা ড্ৰোনেৰে আক্ৰমণ কৰে, তেন্তে আমেৰিকাই ইৰানৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ সেতু, বিদ্যুৎকেন্দ্ৰ বা আন আন্তঃগাঁথনি লক্ষ্য কৰি সামৰিক অভিযান চলাব।ইফালে প্ৰায় দুসপ্তাহ ধৰি দুয়োখন দেশৰ মাজত সামৰিক সংঘৰ্ষ অব্যাহত আছে। আমেৰিকাই ইৰানৰ একাধিক লক্ষ্যস্থলত ধাৰাবাহিক বায়ু আক্ৰমণ অব্যাহত ৰাখিছে। ইয়াৰ প্ৰতিক্ৰিয়াত ইৰানেও পাৰস্য উপসাগৰ অঞ্চলত আমেৰিকাৰ মিত্ৰ দেশসমূহক লক্ষ্য কৰি ক্ষেপণাস্ত্ৰ আৰু ড্ৰোন হামলা চলাইছে। কুৱেইটৰ সামৰিক বাহিনীয়ে শত্ৰুপক্ষৰ ড্ৰোন ধ্বংস কৰাৰ কথা নিশ্চিত কৰিছে।

বিশ্লেষকসকলৰ মতে, যদি হৰ্মুজ জলডমৰুমধ্যত উত্তেজনা অধিক বৃদ্ধি পায়, তেন্তে বিশ্বব্যাপী তেল যোগান আৰু জ্বালানি মূল্যত ইয়াৰ গভীৰ প্ৰভাৱ পৰিব পাৰে। মধ্যপ্ৰাচ্যৰ এই সংকট আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় অৰ্থনীতিৰ বাবেও নতুন চিন্তাৰ কাৰণ হৈ উঠিছে।

ৰাহুল গান্ধীৰ ৰক্তাক্ত ছবি ঃ কংগ্ৰেছৰ ৰাজনৈতিক বৰ্ণনাক সলনি কৰিলে নেকি

জন জন বিচাৰ
...✍নতুন দিল্লী

'নীট' প্ৰশ্নকাকত ফাঁছৰ অভিযোগ আৰু ছাত্ৰ আন্দোলনক কেন্দ্ৰ কৰি দেশৰ ৰাজনীতি উত্তপ্ত হৈ থকাৰ মাজতে লোকসভাৰ বিৰোধী দলপতি ৰাহুল গান্ধীৰ এখন ছবি এতিয়া সমগ্ৰ ৰাজনৈতিক পৰিসৰত তীব্ৰ চৰ্চাৰ বিষয় হৈ পৰিছে। আৰক্ষীৰ সৈতে হোৱা সংঘৰ্ষৰ সময়ত আঘাতপ্ৰাপ্ত, নাকৰ পৰা ৰক্ত ওলোৱা, কাপোৰ ধূলিমলিন আৰু এপাত জোতা নোহোৱা অৱস্থাত আৰক্ষীয়ে তেওঁক আটক কৰি নিয়াৰ দৃশ্য সামাজিক মাধ্যম আৰু সংবাদ মাধ্যমত ব্যাপকভাৱে প্ৰচাৰিত হৈছে।

বিশ্লেষকসকলৰ মতে, এই ছবিখনে কংগ্ৰেছক পুনৰ আন্দোলনৰ কেন্দ্ৰবিন্দুত লৈ আহিবলৈ সহায় কৰিছে। ইয়াৰ পূৰ্বে 'নীট' প্ৰশ্নকাকত ফাঁছৰ বিৰুদ্ধে চলি থকা আন্দোলনত অন্য সংগঠনৰ সক্ৰিয় উপস্থিতিৰ বাবে কংগ্ৰেছ কিছু আঁৰত পৰিছিল বুলি ধাৰণা গঢ় লৈ উঠিছিল। কিন্তু

ৰাহুল গান্ধীৰ এই প্ৰতিবাদ আৰু তাৰ পিছৰ ঘটনাই দলটোক পুনৰ মূল বিৰোধী শক্তি হিচাপে উপস্থাপন কৰাৰ সুযোগ দিছে।

ঘটনাৰ দিনা ৰাহুল গান্ধী, প্ৰিয়ংকা গান্ধী আৰু কংগ্ৰেছৰ কেইবাজনো জ্যেষ্ঠ নেতাই ৭, লোক কল্যাণ মাৰ্গৰ সমীপত ছাত্ৰ আন্দোলনকাৰীৰ ওপৰত আৰক্ষীৰ বলপ্ৰয়োগৰ প্ৰতিবাদ সাব্যস্ত কৰিছিল। আৰক্ষীয়ে তেওঁলোকক আঁতৰাই নিয়াৰ সময়তে ধস্তাধস্তিৰ সৃষ্টি হয় আৰু ৰাহুল গান্ধী আঘাতপ্ৰাপ্ত হোৱা বুলি কংগ্ৰেছে অভিযোগ কৰে। আনহাতে, আৰক্ষীয়ে নিৰাপত্তাজনিত কাৰণত এই ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা বুলি স্পষ্ট কৰিছে।

এই ঘটনাৰ পিছতে কংগ্ৰেছে সমগ্ৰ দেশতে ছাত্ৰ-যুৱকসকলৰ অধিকাৰ, পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ স্বচ্ছতা আৰু চৰকাৰৰ জবাবদিহিতাক কেন্দ্ৰ কৰি আন্দোলন অধিক তীব্ৰ কৰাৰ ইংগিত দিছে। দলটোৰ নেতৃত্বই দাবী কৰিছে যে এই বিষয় কেৱল এটা পৰীক্ষাৰ গণ্ডীত সীমাবদ্ধ নহয়, বৰঞ্চ দেশৰ লাখ লাখ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ ভৱিষ্যতৰ সৈতে জড়িত। আনহাতে, বিজেপিয়ে কংগ্ৰেছৰ এই কাৰ্যসূচীক ৰাজনৈতিক নাটক আখ্যা দি জনসাধাৰণৰ সহানুভূতি লাভৰ চেষ্টা বুলি সমালোচনা কৰিছে।

ৰাজনৈতিক মহলৰ মতে, এই ঘটনাই কংগ্ৰেছৰ কৌশলত নতুন গতি আনিছে। কংগ্ৰেছে কেৱল শিক্ষা মন্ত্ৰীৰ ওপৰত নহয়, প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ ওপৰতো এই বিষয়ত নৈতিক আৰু ৰাজনৈতিক দায়িত্ব আৰোপ কৰাৰ চেষ্টা কৰিছে। দলটোৰ মতে, পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ বিশ্বাসযোগ্যতা ৰক্ষা আৰু ছাত্ৰ-যুৱ সমাজৰ উদ্বেগৰ উত্তৰ দিয়াটো কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ দায়িত্ব।

অৱশ্যে, প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ চৰকাৰী বাসভৱনৰ ওচৰত এইধৰণৰ প্ৰতিবাদ উপযুক্ত আছিল নে নহয়, তাক লৈ ৰাজনৈতিক বিতৰ্ক অব্যাহত আছে। শাসক পক্ষই ইয়াক নিৰাপত্তা বিধি উলংঘন বুলি সমালোচনা কৰাৰ বিপৰীতে কংগ্ৰেছে ইয়াক গণতান্ত্ৰিক অধিকাৰৰ অংশ বুলি দাবী কৰিছে।

ৰাজনৈতিক পৰ্যবেক্ষকসকলৰ মতে, ৰাজনীতিত বহু সময়ত এখন ছবিয়েই দীঘলীয়া ৰাজনৈতিক বাৰ্তা বহন কৰে। ৰাহুল গান্ধীৰ এই ছবি আগন্তুক দিনত 'নীট' বিতৰ্ক আৰু কংগ্ৰেছৰ ৰাজনৈতিক কৌশল-দুয়োটাৰে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰতীক হিচাপে বিবেচিত হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

ব্লগক লৈ সৃষ্টি হোৱা বিভ্ৰান্তিৰ অন্ত পেলালে অমিতাভ বচ্চনে

মই সম্পূৰ্ণ সুস্থ আছোঁ, মোৰ লিখনিৰ ভুল ব্যাখ্যা কৰা হৈছে

জন জন বিচাৰ
...✍ মুম্বাই

বলিউডৰ মহানায়ক অমিতাভ বচ্চনে তেওঁৰ শেহতীয়া ব্লগ পোষ্টক কেন্দ্ৰ কৰি সামাজিক মাধ্যমত সৃষ্টি হোৱা বিভ্ৰান্তিৰ অৱসান ঘটাই স্পষ্টকৈ জনাইছে যে তেওঁ সম্পূৰ্ণ সুস্থ আছে। তেওঁৰ ভাষ্য অনুসৰি, ব্লগত লিখা কথাখিনি বহুতে ভুল অৰ্থত গ্ৰহণ কৰাৰ ফলতেই তেওঁৰ স্বাস্থ্যক লৈ অযথা উদ্বেগৰ সৃষ্টি হৈছিল।

অমিতাভে কয়, তেওঁ লিখা ব্লগটো কোনো ব্যক্তিগত স্বাস্থ্যজনিত অৱস্থাৰ বৰ্ণনা নাছিল। বৰঞ্চ, কোনো কঠিন পৰিস্থিতিৰ পিছত মানসিকভাৱে পুনৰ থিয় দিয়াৰ প্ৰয়োজনীয়তা বুজাবলৈ আৰ্জেণ্টিনাৰ পৰাজয় আৰু ফুটবল কিংবদন্তি লিঅনেল মেছিৰ উদাহৰণ দিছিল।

তেওঁ ব্লগত লিখিছে, 'মই সম্পূৰ্ণ সুস্থ আছোঁ। মোৰ লিখনিৰ ভুল ব্যাখ্যা কৰা হৈছে।' তেওঁ বুজাই কয় যে, যিদৰে অস্ত্ৰোপচাৰ বা আইচিইউৰ পৰা ওলাই ঘৰলৈ উভতি অহাৰ পিছত ৰোগীয়ে নতুন বাস্তৱতাৰ সৈতে খাপ খুৱাব লাগে, ঠিক সেইদৰে এগৰাকী চেম্পিয়নৰ বাবে পৰাজয়ৰ পিছত নিজকে পুনৰ গঢ়ি তোলাটোও আটাইতকৈ ডাঙৰ প্ৰত্যাহ্বান।

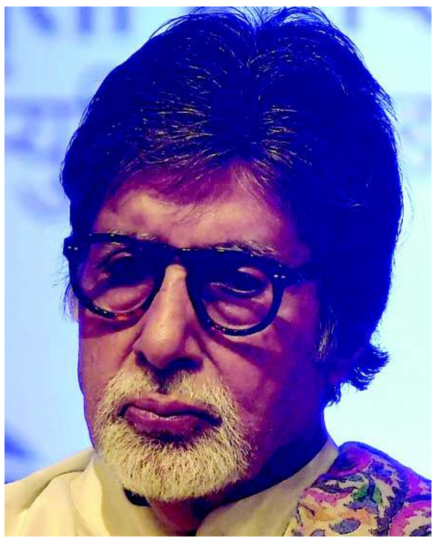

উল্লেখযোগ্য যে পূৰ্বৰ ব্লগত তেওঁ চিকিৎসালয়, অস্ত্ৰোপচাৰ আৰু সুস্থ হৈ উঠাৰ প্ৰক্ৰিয়াৰ বিষয়ে ৰূপকভাৱে উল্লেখ কৰিছিল। তাৰ পিছতে অনুৰাগীসকলৰ মাজত তেওঁৰ স্বাস্থ্যক লৈ উদ্বেগ বৃদ্ধি পায়। অৱশেষত নতুন ব্লগত তেওঁ সকলো জল্পনা-কল্পনাৰ অন্ত পেলাই অনুৰাগীসকলক আশ্বস্ত কৰে যে তেওঁৰ স্বাস্থ্য সম্পূৰ্ণ স্বাভাৱিক আছে।

অমিতাভ বচ্চনৰ এই স্পষ্টীকৰণে দেখুৱাইছে যে সামাজিক মাধ্যমত প্ৰকাশ কৰা বক্তব্য বহু সময়ত প্ৰসংগৰ বাহিৰত ব্যাখ্যা হব পাৰে। সেয়ে যিকোনো তথ্যৰ সঠিক অৰ্থ বুজি লোৱাটো আৰু নিশ্চিত তথ্যৰ ওপৰতহে বিশ্বাস কৰাটো অত্যন্ত প্ৰয়োজন।অটুট ৰখাৰ এক শক্তিশালী প্ৰেৰণাৰূপে অনুৰাগীসকলক অনুপ্ৰাণিত কৰিছে।

ফুলৰ চাহঃ সোৱাদৰ লগতে স্বাস্থ্যৰো উত্তম সংগী

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

চাহ বিশ্বৰ আটাইতকৈ জনপ্ৰিয় পানীয়সমূহৰ অন্যতম। কিন্তু গ্ৰীষ্মকালত গাখীৰ-চাহৰ সলনি বিভিন্ন ফুলেৰে প্ৰস্তুত কৰা ভেষজ চাহ স্বাস্থ্যৰ বাবে অধিক উপকাৰী বুলি আয়ুৰ্বেদে উল্লেখ কৰিছে। পদুম, জবা, গোলাপ, মৌলশ্ৰী, শিউলি (পাৰিজাত), কৃষ্ণকমল, লেভেণ্ডাৰ আৰু তুলসীৰে প্ৰস্তুত কৰা চাহে শৰীৰ শীতল ৰখাৰ লগতে ৰোগ প্ৰতিৰোধ ক্ষমতা বৃদ্ধি, মানসিক চাপ হ্ৰাস আৰু সতেজতা অটুট ৰখাত সহায় কৰে।

মৌলশ্ৰীৰ চাহ : জ্বৰ, পুৰণি কাহ, ছালৰ সমস্যা আৰু মানসিক চাপ হ্ৰাস কৰাত উপকাৰী।

পদুমৰ চাহ : গৰমৰ দিনত অতিপিয়াহ, শৰীৰৰ জ্বলা-পোৰা কমায়, মন শান্ত ৰাখে আৰু ভাল টোপনি অহাত সহায় কৰে।

জবাৰ চাহ : ভিটামিন 'চি' সমৃদ্ধ। ৰক্তচাপ নিয়ন্ত্ৰণ, ৰোগ প্ৰতিৰোধ ক্ষমতা বৃদ্ধি আৰু ছাল উজ্জ্বল কৰাত সহায়ক।

গোলাপৰ চাহ : মন প্ৰফুল্ল ৰাখে, হজম শক্তি উন্নত কৰে, ক্লান্তি আৰু উদ্বেগ হ্ৰাস কৰে।

শিউলি (পাৰিজাত)ৰ চাহ : গাঁঠিৰ বিষ, ফুলি থকা অৱস্থা আৰু ঠাণ্ডা-জ্বৰ প্ৰতিৰোধত সহায়ক।

কৃষ্ণকমলৰ চাহ : উদ্বেগ, অনিদ্ৰা আৰু মানসিক অশান্তি কমাই গভীৰ নিদ্ৰাত সহায় কৰে।

লেভেণ্ডাৰৰ চাহ : শৰীৰ-মনক শিথিল কৰি ক্লান্তি দূৰ কৰে আৰু ছালৰ উজ্জ্বলতা বৃদ্ধি কৰে।

কিদৰে প্ৰস্তুত কৰিব ?

এটা কাপ গৰম পানীত ১-২ চামুচ সতেজ বা শুকান ফুল ৫-১০ মিনিট ঢাকি থৈ ছেকি লওক। ইচ্ছা অনুসৰি মৌ বা নেমুৰ ৰস মিহলাই খাব পাৰে।

আয়ুৰ্বেদ বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, নিয়মিতভাৱে দৈনিক ১-২ কাপ ফুলৰ ভেষজ চাহ সেৱন কৰিলে গৰমজনিত ক্লান্তি, মানসিক চাপ আৰু ৰোগ প্ৰতিৰোধ ক্ষমতা হ্ৰাসৰ দৰে সমস্যাৰ পৰা কিছু পৰিমাণে সুৰক্ষা লাভ কৰিব পাৰি। অৱশ্যে কোনো বিশেষ ফুলত এলাৰ্জি থাকিলে চিকিৎসক বা আয়ুৰ্বেদ বিশেষজ্ঞৰ পৰামৰ্শ লোৱাটো জৰুৰী।

ছেপ্টেম্বৰত আৰম্ভ হ'ব 'বিগ বচ'ৰ নতুন ছিজন

দেশৰ জনপ্ৰিয় বাস্তৱধৰ্মী প্ৰতিযোগিতামূলক অনুষ্ঠান 'বিগ বচ'ৰ নতুন ছিজন অহা ছেপ্টেম্বৰৰ পৰা আৰম্ভ হ'ব। এই উপলক্ষে জিঅ'ষ্টাৰে 'ইণ্ডিয়াজ বিগ ৰিয়েলিটি' শীৰ্ষক এখন বিশেষ স্মাৰক গ্ৰন্থ উন্মোচন কৰিছে। এই গ্ৰন্থত 'বিগ বচ'ৰ দীৰ্ঘ যাত্ৰা, ভাৰতীয় সমাজ-সংস্কৃতিৰ ওপৰত ইয়াৰ প্ৰভাৱ আৰু মনোৰঞ্জন জগতত গঢ়ি তোলা বিশেষ অৱদানৰ বিস্তৃত বিৱৰণ সন্নিবিষ্ট কৰা হৈছে।

জিঅ'ষ্টাৰৰ দূৰদৰ্শন মনোৰঞ্জন বিপণন বিভাগৰ মুৰব্বী মহেশ শেট্টিয়ে কয় যে, বিগত দুটা দশকত 'বিগ বচ'ই সময়ৰ সৈতে খাপ খুৱাই নিজকে ন ন ৰূপত দৰ্শকৰ সন্মুখত উপস্থাপন কৰি আহিছে। তেওঁৰ মতে, এইবাৰৰ উৎসৱৰ বতৰত হিন্দী, তামিল, তেলুগু, কন্নড়, মালয়ালম আৰু বাংলা-এই ছয়টা ভাষাত একেলগে নতুন ছিজন আৰম্ভ হোৱাটো অনুষ্ঠানটোৰ এক উল্লেখযোগ্য সাফল্য।

জিঅ'ষ্টাৰৰ ডিজিটেল মনোৰঞ্জন বিপণন বিভাগৰ মুৰব্বী ভাস্কৰ ৰমেশে কয় যে, ২৪ ঘণ্টীয়া পোনপটীয়া সম্প্ৰচাৰ, কোটি কোটি দৰ্শকৰ ভোটদান আৰু প্ৰত্যক্ষ বাৰ্তালাপৰ সুবিধাই অনুষ্ঠানটোৰ সৈতে দৰ্শকৰ সম্পৃক্ততা বছৰে বছৰে ৪৭ শতাংশ বৃদ্ধি কৰিছে। তেওঁৰ মতে, 'বিগ বচ' কেৱল মনোৰঞ্জনৰ অনুষ্ঠানেই নহয়, ব্যৱসায়িক প্ৰতিষ্ঠানসমূহৰ বাবেও এক ফলপ্ৰসু প্ৰচাৰ মঞ্চ।
উল্লেখযোগ্য যে 'বিগ বচ' মূলতঃ নেদাৰলেণ্ডছৰ জনপ্ৰিয় 'বিগ ব্ৰাদাৰ' অনুষ্ঠানৰ আৰ্হিত নিৰ্মিত। ইয়াত প্ৰতিযোগীসকলে বিশেষভাৱে নিৰ্মিত গৃহত বাহ্যিক জগতৰ পৰা বিচ্ছিন্ন হৈ একেলগে বাস কৰি বিভিন্ন পৰীক্ষা আৰু প্ৰতিযোগিতাৰ সন্মুখীন হয়।নতুন ছিজনৰ ঘোষণাৰ লগে লগে অনুষ্ঠানটোৰ অনুৰাগীসকলৰ মাজত ব্যাপক উৎসাহৰ সৃষ্টি হৈছে।

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

Guwahati, Friday, 24 July 2026

"The greatest investment a society can make is in education, innovation and the values of humanity."

ISRO Faces Talent Exodus as Private Space Boom Reshapes India's Space Race

Over 120 Scientists Resigned Government Tightens Exit Rules

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

India's space programme has entered a new phase of both opportunity and challenge. While the country's rapidly expanding private space sector is attracting record investments and global attention, the Indian Space Research Organisation (ISRO) is facing an unprecedented wave of resignations from experienced scientists, prompting the Government of India to introduce stricter rules governing resignations from key strategic projects.

According to official figures and reports, more than 120 scientists have resigned from ISRO in recent years, with a significant number coming from premier centres involved in critical national missions. Among those who left are several senior scientists associated with landmark projects such as Chandrayaan-3, Gaganyaan, and India's heavy-lift launch vehicle programme.

The resignations come at a time when ISRO is preparing for some of its most ambitious missions, including the country's first human spaceflight under the

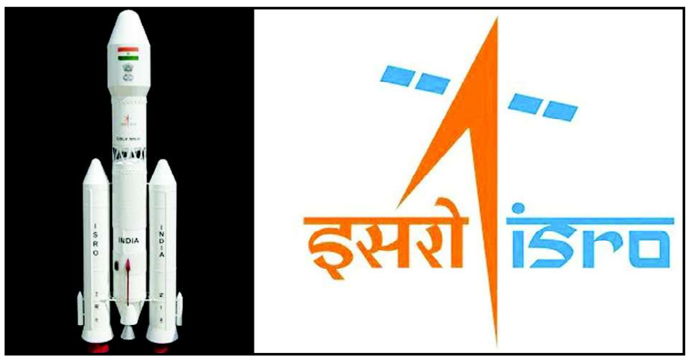

- **Private Space Sector Emerges as Major Attraction**
- **Within 5 years more than 400 private space startups have emerged.**

Gaganyaan Mission, advanced satellite launches, and future deep-space exploration programmes.

The transformation of India's space ecosystem after the 2020 space sector reforms has created hundreds of new employment opportunities for aerospace engineers and scientists.

Hundreds of millions of dollars have been invested in Indian space technology.

Companies such as Skyroot Aerospace, Agnikul Cosmos, Pixxel, Digantara, and several others are developing launch vehicles, satellites, propulsion systems, and space-based applications.

These firms are offering- Higher salaries, Faster career growth, Greater research flexibility, Faster decision-making and innovation.

Industry experts believe this has created intense competition for highly skilled aerospace professionals who were once almost exclusively employed by ISRO.

The resignations coincide with delays in several important ISRO missions, including Gaganyaan test missions, SSLV launch schedule, GSLV missions, Industry-built PSLV missions.

Experts point to longer approval processes, centralized decision-making, and increasing administrative delays as factors affecting project timelines.

Government Moves to Protect Strategic Projects

Recognising the importance of retaining experienced scientists, the Department of Space has issued fresh guidelines.

Under the new policy- Scientists associated with strategic national missions such as Gaganyaan will no longer receive routine approval for resignations.

Every resignation from critical projects will require clearance from the Department of Space.

The government has expressed concern that the departure of experienced personnel could affect national programmes involving years of specialised expertise.

Space policy experts believe ISRO may need to modernise its workforce structure by adopting a hybrid employment model similar to international space agencies.

Suggested reforms include:- Project-based recruitment, Greater collaboration with industry, Competitive compensation, Flexible research opportunities, Stronger talent retention programmes.

Such measures, experts argue, would allow ISRO to retain institutional knowledge while benefiting from the rapidly expanding private ecosystem.

The rapid growth of India's private space industry reflects the success of recent policy reforms and positions the country as a major global space power. However, the migration of experienced scientists from ISRO to private companies has also exposed the need for balancing innovation with national strategic interests.

For decades, ISRO was the primary destination for India's brightest aerospace minds. Today, it has become the anchor of a much larger space ecosystem where government agencies and private enterprises compete for the same talent.

The challenge before India is no longer limited to launching rockets-it is equally about retaining the scientific talent that makes those missions possible.

India's space ambitions are entering a defining decade. The rise of private space companies is a welcome sign of technological maturity, but safeguarding national expertise remains equally critical. Striking the right balance between public research institutions and private innovation will determine whether India can sustain its momentum as a leading global space power.

Rare Himalayan Mole Rescued in Manas

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

Forest Department Saves Endangered Mammal Swept Away by Manas River, CM Praises Frontline Staff

In a remarkable example of Assam's growing commitment to wildlife conservation, the Assam Forest Department successfully rescued a rare Himalayan Mole (Euroscaptor micrurus) after it was swept away by the strong currents of the Manas River and safely released it back into its natural habitat inside Manas National Park.

The rescue operation, carried out by alert frontline forest personnel, has been widely appreciated by conservationists and wildlife enthusiasts. The endangered mammal, native to the Himalayan region and rarely seen in the wild, was carefully tracked, rescued, medically examined, and released into a secure forest habitat, ensuring its survival.

Chief Minister Dr. Himanta Biswa Sarma lauded the dedication and professionalism of the

Continued on page 16

NEWS IN BRIEF

Two Youths Detained

Guwahati : Dispur Police detained two youths-Nakul Mili of Dibrugarh and Gaurav Singh of Guwahati-for allegedly painting a portrait of activist Sonam Wangchuk on a public wall near Jyoti Bishnu Bhawan without official permission. An FIR (Case No. 524/26) has been registered, and legal proceedings have begun. A separate case has also been registered over unauthorized paintings beneath the Basistha Flyover, with authorities warning of strict action against defacement of public property.

AI-Morphed Photos of Students

Nagaon: Tension gripped Samaguri in Assam's Nagaon district after AI-generated morphed photographs of students and teachers from Alhaj Nurul Hussain High School were allegedly circulated on social media. Police have detained the accused, identified as Riajul, after local residents confronted him and handed him over to authorities. Investigators are examining his digital devices and social media accounts to determine the extent of the circulation and identify other possible victims. The incident has sparked fresh concerns over the misuse of artificial intelligence to create objectionable content, particularly targeting students and educational institutions.

20 Cattle Die

Tinsukia: At least 20 cattle have died and several others remain critical at a gaushala in Assam's Tinsukia district, with veterinary experts suspecting food poisoning as the likely cause. The shelter, which houses over 300 cattle, believes the animals fell ill after consuming puffed rice (muri) collected from Tinsukia Siding Market, raising fears of contaminated feed. Preliminary veterinary findings point to food poisoning, though laboratory tests are awaited to determine whether the contamination was accidental or deliberate. The gaushala management has demanded a fair and thorough investigation into the incident.

Youth Dies En Route to Kerala

Jorhat: A 32-year-old man from Majuli, Abhijit Sonowal, died under mysterious circumstances in Kakinada, Andhra Pradesh, while travelling to Kerala in search of work. His family has alleged foul play and demanded a thorough investigation. The incident has renewed concerns over the safety of Assamese migrant workers.

Eight Islamic organisations announce break with Congress

SEEK LAND RIGHTS UNDER BASUNDHARA

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

In a development with potentially far-reaching political implications, a coalition of eight Islamic organisations in Assam announced that it was severing ties with the Congress, while extending support to the BJP's development agenda and urging the State Government to bring eligible poor and landless Muslims under the Mission Basundhara land settlement scheme.

Addressing a joint press conference, the organisations welcomed Chief Minister Dr. Himanta Biswa Sarma's recent assurance in the Assembly that eligible Indian Muslims could be considered under the flagship land rights programme. They demanded a comprehensive survey of the char-chapori areas and the issuance of land pattas to genuine beneficiaries.

The coalition accused the Congress of failing to raise the issue of land rights for poor Muslims, claiming that apart from Dalgaon MLA Majibur Rahman, no party legislator had seriously pursued the matter. It also criticised Congress MP Rakibul Hussain, alleging that he had failed to effectively represent the concerns of Assamese Muslims after being elected to Parliament.

Declaring a symbolic 'three talaq' to the Congress, the organisations said development, welfare and land security had become the priorities of Assamese Muslims over traditional political loyalties. They further claimed they would work to ensure a decisive BJP victory in the forthcoming Nagaon Lok Sabha by-election, asserting that voters were increasingly backing development-oriented politics.

While the State Government has yet to formally respond to the organisations' latest appeal, the development has already sparked widespread discussion over changing political priorities among sections of Assamese Muslims.

Organisations in the Joint Forum

The united platform comprises:
All Assam Ahle Sunnat Madrassa Education Board
Ulama Council (BTC)
As-Sunnah Trust
Rashtriya Ulama Council,
Assam Islamic Research Center
Jamat Ulama Sunni Assam
Anjomane Tanzime Millat, Assam
Hedayat Islam, Assam

Continued from page 15

Rare Himalayan Mole Rescued...

Forest Department staff. Sharing the successful rescue on social media, the Chief Minister described the operation as another example of Assam's unwavering commitment to protecting its rich biodiversity and preserving every species that inhabits the state's forests.

Rare Species, Timely Rescue : The Himalayan Mole is an elusive, burrowing mammal found primarily in the Himalayan ecosystem. Its appearance in the floodwaters of the Manas River is believed to have resulted from strong river currents and changing monsoon conditions. Forest officials acted swiftly after receiving information about the displaced animal. Their prompt response ensured the mole suffered no major injuries before being released into its natural environment within the protected landscape of Manas National Park.

Manas: A Global Conservation Success Story

The successful rescue once again highlights the ecological significance of Manas National Park, a UNESCO World Heritage Site renowned for its exceptional biodiversity. The park shelters several endangered species, including the Bengal tiger, Indian elephant, one-horned rhinoceros, pygmy hog, golden langur, clouded leopard, and numerous rare birds and mammals.

Wildlife experts believe such rescue operations demonstrate the increasing efficiency of Assam's forest protection network and its ability to respond quickly during the monsoon season, when floods often displace wild animals from their natural habitats.

Strengthening Assam's Green Legacy

Over the past few years, Assam has intensified wildlife conservation through anti-poaching initiatives, habitat restoration, scientific monitoring, and rapid rescue operations. The successful rehabilitation of the Himalayan Mole adds another milestone to these efforts and reflects the dedication of forest frontline staff working in challenging conditions.

The rescue of the rare Himalayan Mole is more than a wildlife success story-it is a reminder that conservation begins with protecting even the smallest and least visible creatures. As climate change and extreme weather increasingly threaten fragile ecosystems, Assam's swift response demonstrates how committed conservation efforts can safeguard the state's extraordinary natural heritage for future generations.

India, Myanmar Mull Land Swap to Settle Boarder Issues

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

India and Myanmar are reportedly considering a limited land exchange as part of efforts to resolve pending boundary alignment issues and expedite fencing along their shared border, a move that could significantly strengthen security along the sensitive northeastern frontier.

According to reports citing an official document, the proposal involves the exchange of around 1.4 square miles of land between Border Pillars 65 and 68 in Manipur's Chandel district, adjoining Myanmar's Kabaw Valley in the Sagaing Region. The initiative is aimed at completing the demarcation of the boundary in one of the few unresolved stretches.

The reported move comes as India steps up efforts to secure its 1,643-km border with Myanmar, which passes through Arunachal Pradesh, Nagaland, Manipur and Mizoram. The porous frontier, marked by dense forests and difficult terrain, has long posed challenges due to illegal migration, cross-border smuggling and insurgent movement.

While New Delhi has consistently maintained that there is no formal boundary dispute with Myanmar under the 1967 India-Myanmar Boundary Agreement, a few segments, particularly in Manipur and near the India-Myanmar-China tri-junction, continue to require precise ground demarcation.

Officials believe that completing the boundary alignment would facilitate faster implementation of the Centre's border fencing project and strengthen surveillance in strategically important areas.

If approved by both governments, the proposed land exchange would represent a significant diplomatic step towards resolving long-pending boundary issues while enhancing border management and security cooperation between the two neighbouring countries.

Nagaland Bets Big on Bamboo Empowers 30,000 Women

Jan Jan Vichar
...✍Kohima

In a major push towards sustainable rural livelihoods, the Nagaland Government has signed a Memorandum of Understanding (MoU) with Bengaluru-based Industree Foundation to integrate 30,000 women farmers into the state's bamboo value chain through certified plantations, processing facilities and improved market access.

The agreement, signed between the Nagaland State Rural Livelihoods Mission (NSRLM) and the foundation, is part of the Bamboo Sub-Sector Initiative under the Deendayal Antyodaya Yojana–National Rural Livelihoods Mission (DAY-NRLM) of the Union Ministry of Rural Development.

Under the partnership, Industree Foundation will serve as NSRLM's technical and knowledge partner, supporting the establishment of certified bamboo plantations, strengthening processing infrastructure, promoting value-added bamboo products and connecting producers with high-value domestic and international markets.

The initiative also aims to develop women-led collective enterprises, facilitate carbon credit accreditation and create traceable supply chains, enabling smallholder women farmers to earn higher and more sustainable incomes.

Industree Foundation CEO Neju George Abraham said bamboo has long been central to Nagaland's culture and economy, and the state's rich bamboo resources offer immense commercial potential if supported by modern processing and market linkages. The project is expected to generate rural employment, promote environmentally sustainable industries and strengthen women-led entrepreneurship across the state.

The foundation has implemented similar bamboo livelihood programmes in Andhra Pradesh, Arunachal Pradesh, Jharkhand, Odisha, Telangana and Tripura, making Nagaland the latest state to join the initiative aimed at transforming bamboo into a major driver of rural economic growth.

NEWS IN BRIEF

Speaker Recognises Six Rebel MPs in Shinde Camp

New Delhi : In a major political setback for Uddhav Thackeray, Lok Sabha Speaker Om Birla has recognised six rebel Shiv Sena (UBT) MPs who joined the Eknath Shinde-led Shiv Sena. With the recognition, the MPs will continue as Lok Sabha members under the anti-defection law, having secured the required two-thirds strength. The move raises the Shinde faction's strength in the Lok Sabha to 13 MPs, while the Uddhav Thackeray camp is left with three MPs.

Kakoli Ghosh Recognised as NCPI Chief Whip

New Delhi : Lok Sabha Speaker Om Birla has approved separate seating for 20 MPs who broke away from the Trinamool Congress (TMC) to join the National Citizens Party of India (NCPI). The Speaker has also recognised Dr. Kakoli Ghosh Dastidar as the party's Chief Whip.

Woman Held for Plotting Husband's Murder with Snake

Meerut: Police in Meerut, Uttar Pradesh, have arrested a woman, her alleged lover, and two snake charmers for allegedly conspiring to murder her husband and stage the death as a snakebite. Investigators claim the accused sedated the victim before releasing a venomous krait into his room. The plot reportedly involved an alleged affair and a Rs. 20 lakh life insurance policy. The case came to light after a post-mortem raised suspicion, prompting a detailed investigation that uncovered the alleged conspiracy. The matter is under investigation, and the allegations are yet to be tested in court.

PM Inaugurates Redeveloped Barmer Railway Station

Barmer: Prime Minister Narendra Modi has virtually inaugurated the redeveloped Barmer Railway Station under the Amrit Bharat Station Scheme. One of western Rajasthan's oldest railway stations, Barmer has a history spanning over 125 years and once served as a key rail link to Hyderabad (Sindh) and Karachi before the 1965 India-Pakistan war. The station also withstood Pakistani air attacks during the 1971 war. Redeveloped with modern passenger amenities while preserving its heritage, the station reflects Barmer's strategic and historical importance in India's railway network.

Former Punjab SHO Arrested in 16 Lakh Extortion Case

Jalandhar: Punjab Police has arrested Gurinderjit Singh Nagra, former SHO of Tanda Police Station, over allegations of extorting Rs. 16 lakh from a family residing in the United States. The action follows an investigation that reportedly found evidence, including financial records, technical analysis and witness statements, linking the officer to the alleged extortion. Nagra has been suspended, an FIR has been registered, and departmental proceedings have been initiated. Police said further investigation is underway to uncover the full extent of the alleged conspiracy.

EDITORIAL

A New Orbit for India's Space Ambitions

India's space journey entered a historic new chapter with the successful launch of Vikram-1, the country's first privately developed orbital-class rocket by Hyderabad-based Skyroot Aerospace. Coming 46 years after the launch of SLV-3, this achievement is far more than a technological milestone-it reflects the evolution of India's space programme from being solely government-driven to becoming a collaborative ecosystem where public institutions and private enterprise work together.

The success of Mission Aagaman demonstrates the impact of the reforms that opened India's space sector to private participation. Today, hundreds of space startups are contributing to launch vehicles, satellite technology, earth observation and downstream services, creating new opportunities for innovation, investment and high-skilled employment.

However, celebration must be accompanied by responsibility. Entering the commercial space race means India must continuously strengthen launch reliability, quality standards, cybersecurity, space sustainability and regulatory oversight. Private participation should complement-not replace-the experience and scientific excellence built over decades by ISRO.

The success of Vikram-1 also carries a larger message. Nations that invest in science, research and entrepreneurship build not only stronger economies but also greater strategic self-reliance. India's growing space ecosystem can support communications, disaster management, agriculture, navigation and national security while opening new avenues in the global space economy.

The launch of Vikram-1 is therefore not the destination but the beginning of a new era. If government policy, private innovation and scientific talent continue to move in the same direction, India can emerge as one of the world's leading space powers. The countdown to that future has already begun.

Viksit Bharat 2047: Ambitious Vision or Delayed Reality?

Jan Jan Vichar
...✍Kamlesh Pandey

If you are optimistic about India's vision of becoming a developed nation by 2047, it may be worth pausing to consider an alternative perspective. Some economists argue that unless India significantly improves its economic growth rate, productivity, employment generation and structural reforms, the country may not achieve developed-nation status until 2075, rather than 2047.

It is important to note that this is not an official government projection, but an economic assessment based on current trends. Whether this view ultimately proves accurate will depend on how India's economy performs over the coming decades. Nevertheless, the debate has provided political ammunition to critics of the government's ambitious "Viksit Bharat 2047" vision.

Renowned economist Surjit Bhalla has observed that if the current pace of economic progress continues without major improvements, achieving developed-country status by 2047 could become difficult. His argument is not that India's economy is failing, but that high GDP growth alone is insufficient. Sustainable development also depends on rising productivity, quality employment, higher per capita income and structural reforms.

Key Challenges

Economists identify several major hurdles that could delay India's development journey.

1. Slower Economic Growth

To become a developed economy, India is widely believed to require sustained real GDP growth of around 8–9 percent annually over a long period. If growth remains closer to 6–7 percent, the target may shift further into the future.

2. Low Per Capita Income

A country's development is measured not only by the size of its economy but also by the income of its citizens. Although India's overall GDP is expanding rapidly, its large population keeps per capita income considerably below that of developed nations. Unless individual incomes rise much faster, the goal may remain elusive.

3. Employment Generation

Rapid economic growth must be accompanied by the creation of high-quality jobs. Without adequate employment opportunities, household incomes, consumption and overall economic prosperity cannot grow sustainably.

4. Manufacturing Performance

India has made significant progress in services and digital technology, but the manufacturing sector has not expanded to the level required to generate large-scale employment and exports. A stronger manufacturing base is essential for long-term economic transformation.

5. Global Uncertainties

Geopolitical conflicts, trade barriers, volatile energy prices and global economic slowdowns could also affect India's growth trajectory over the next two decades.

6. Human Capital

Investment in education, healthcare, skill development and labour productivity remains critical. Without substantial improvements in these areas, sustained high growth will be difficult to achieve.

Why the 2047 Goal May Still Be Achievable

While these concerns are significant, they do not amount to a prediction of failure. Many economists believe India can still achieve its 2047 vision if it accelerates reforms and maintains strong economic momentum.

Supporters of the target argue that rapid expansion in the digital economy, artificial intelligence, semiconductor manufacturing, green energy, infrastructure and advanced manufacturing, combined with better governance, investment and skill development, could significantly strengthen India's growth prospects.

The Government of India considers "Viksit Bharat 2047" a flagship national vision, marking the centenary of India's Independence. Achieving this objective will require sustained policy reforms, higher productivity, stronger institutions and inclusive economic development.

Looking Ahead

Rather than viewing 2047 and 2075 as fixed predictions, they should be understood as alternative economic scenarios. The final outcome will depend on India's ability to sustain high growth, generate quality employment, strengthen manufacturing, invest in human capital, improve infrastructure and continue governance reforms.

Ultimately, whether India becomes a developed nation in 2047 or later will be determined not by aspirations alone, but by the pace and effectiveness of reforms implemented over the next two decades.

Jan Jan Vichar
The Student's Corner
Board Exam Focus

CBSE :: Class X :: Social Science :: Chapter 1

The Rise of Nationalism in Europe

Today, we live in countries with defined borders, national flags, constitutions and elected governments. But have you ever wondered how the idea of a nation came into existence? During the eighteenth and nineteenth centuries, Europe was divided into kingdoms and empires ruled by powerful monarchs. People identified themselves more with their local rulers, languages or regions than with a nation.

The idea of nationalism changed this. It encouraged people to believe that those sharing a common history, culture and aspirations should live together as one nation. This chapter traces the rise of nationalism in Europe and explains how it eventually led to the unification of countries like Germany and Italy.

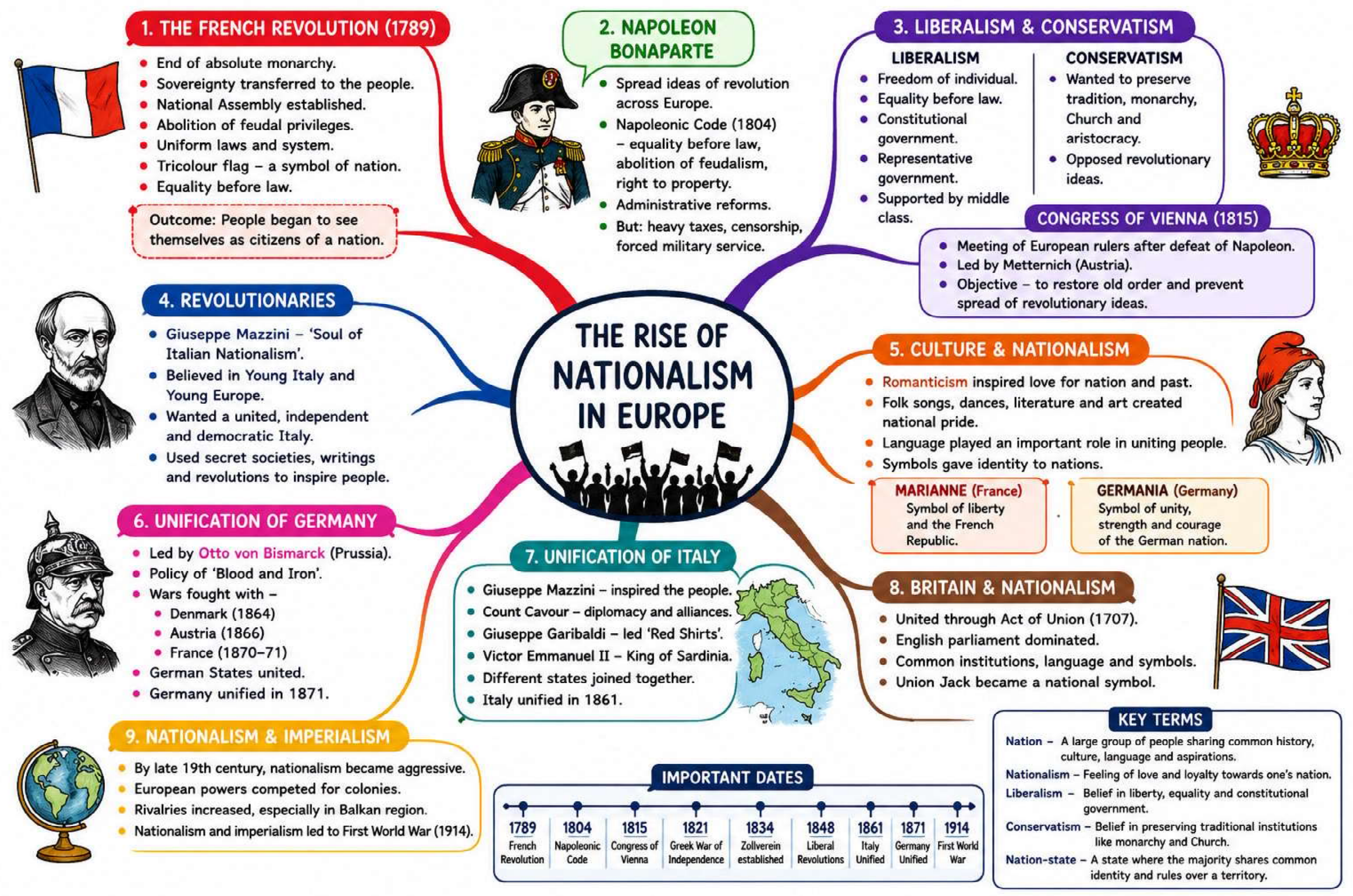

The French Revolution

The Birth of Nationalism

The French Revolution of 1789 is regarded as the beginning of modern nationalism. Before the Revolution, France was ruled by an absolute monarch. The Revolution transferred power from the king to the people and introduced the idea that citizens, rather than rulers, formed the nation.

Several measures strengthened national unity. A new tricolour flag replaced the royal flag, the National Assembly was established, uniform laws were introduced, internal customs barriers were abolished and the French language was promoted across the country. These reforms created a sense of equality and common identity among the people.

The French Revolution transformed subjects into citizens.

Napoleon and the Spread of Nationalism

Napoleon Bonaparte extended French influence across much of Europe. Although he later became an emperor, he introduced several reforms that reflected revolutionary ideals.

His Napoleonic Code (1804) abolished feudal privileges, established equality before the law and protected the right to property. These reforms inspired many Europeans to dream of freedom and national unity.

However, Napoleon's rule also imposed heavy taxes, censorship and compulsory military service. As a result, people initially welcomed him as a liberator but later opposed French domination.

Liberalism and Conservatism

During the nineteenth century, two important political ideas shaped Europe.

Liberalism supported individual freedom, equality before the law, constitutional government and representative institutions. The growing middle class strongly supported these ideals.

In contrast, Conservatism aimed to preserve traditional institutions such as monarchy, the Church and the aristocracy. After Napoleon's defeat, European rulers met at the Congress of Vienna (1815) under Austrian Chancellor Metternich to restore the old political order and prevent future revolutions.

Some Important Questions

1. Explain any five measures introduced by the French revolutionaries to create a sense of collective identity among the French people. (5 Marks)
2. Describe the main features of the Napoleonic Code of 1804. Why was it welcomed in some parts of Europe and opposed in others? (5)
3. "Nationalism no longer retained its idealistic liberal-democratic sentiment after 1871." Justify the statement. (5)
4. Explain the contribution of Giuseppe Mazzini to the growth of nationalism in Europe. (3/5)
5. Explain the role of Otto von Bismarck in the unification of Germany. (5)
6. Describe the role of Count Cavour and Giuseppe Garibaldi in the unification of Italy. (5)
7. Explain the role of culture in creating the idea of nationalism in Europe. (5)

The Unification of Germany and Italy

Nationalism inspired many divided regions to unite into independent nations.

In Germany, the movement was led by Otto von Bismarck, the Chief Minister of Prussia. Through three successful wars against Denmark, Austria and France, Germany was unified in 1871. Bismarck's policy became famous as 'Blood and Iron,' highlighting the role of military strength in nation-building.

Italy followed a similar path. Visionary leaders such as Giuseppe Mazzini, Count Cavour, Giuseppe Garibaldi and King Victor Emmanuel II played crucial roles in bringing together the different Italian states. Italy finally achieved unification in 1861.

Culture and National Identity

Nationalism was not shaped only by wars and political movements. Literature, music, art and language also played a significant role.

Artists created symbolic female figures to represent their nations. In France, Marianne became the symbol of liberty and the republic. In Germany, Germania represented courage, unity and national pride.

Folk songs, poems and local traditions also strengthened people's emotional attachment to their homeland and helped build a common national identity.

Nationalism Turns Aggressive

By the late nineteenth century, nationalism took a different direction. Instead of promoting freedom alone, many powerful European countries began using nationalism to justify imperial expansion. Competition for colonies and political influence created intense rivalries among European nations, especially in the Balkan region. These tensions eventually contributed to the outbreak of the First World War in 1914

KBC 18 Raises the Bar

Knowing Answers Won't Be Enough : Big B

Jan Jan Vichar
...✍Mumbai

India's most celebrated television quiz show, Kaun Banega Crorepati (KBC) is set to return with its 18th season on August 10, 2026, and this time, host Amitabh Bachchan has a clear message for contestants:

'Knowing the answers alone won't be enough-you'll have to think.'

In a series of newly released promotional videos, the legendary actor introduces a refreshed format that reflects the realities of an AI-powered world, where information is readily available but the ability to analyse, interpret and apply knowledge has become more valuable than ever.

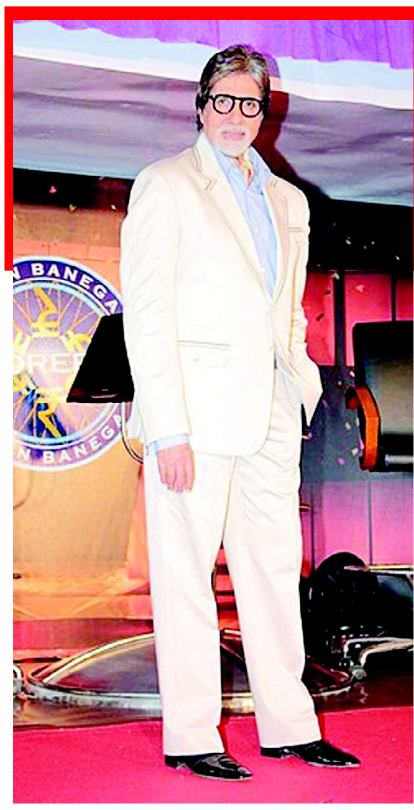

AI Era Inspires New Format Where Critical Thinking Takes Centre Stage

Beyond Google Beyond AI

The makers acknowledge a reality that defines modern life: almost every factual answer is now just a smartphone search away. Artificial Intelligence can generate explanations, solve problems and answer questions within seconds.

However, KBC 18 argues that true intelligence lies not in finding information but in understanding it.

A Reflection of Modern Education

The new format also mirrors global changes in education and recruitment, where employers and academic institutions increasingly value problem-solving abilities over memorised knowledge.

In many competitive examinations, analytical aptitude, comprehension and decision-making have become as important as subject knowledge. KBC appears ready to embrace this evolving trend.

Contestants may now face questions requiring logical reasoning, interpretation of facts, situational judgement and analytical thinking rather than simple recall.

A Quiz Show for the AI Generation- 'SOCHNA PADEGA'

The latest campaign highlights a significant shift in the philosophy of KBC. Instead of rewarding rote memorisation, the new season promises to challenge contestants' reasoning, decision-making and critical thinking skills. Whether in a café, at an airport or standing on a rain-soaked balcony, Amitabh Bachchan repeatedly reminds viewers that today's world has changed dramatically.

"Geography, history and science alone won't be enough this time. The game has changed. Memorising answers won't work anymore... you'll have to think," he says in one of the promos. The campaign's central message- 'Sochna Padega' (You'll Have to Think)—captures the spirit of Season 18.

When and Where to Watch

Kaun Banega Crorepati Season 18 premieres on August 10, 2026, and will air Monday to Friday at 9:00 PM on Sony Entertainment Television and stream on Sony LIV.

Ghoomar: Rajasthan's Timeless Dance of Grace and Tradition

Jan Jan Vichar
...✍Cultural Desk

Ghoomar is one of Rajasthan's most celebrated folk dances, admired for its graceful movements, colourful costumes and rich cultural heritage. Although it is closely associated with Rajput royalty today, historians believe the dance originated among the Bhil tribe, one of Rajasthan's oldest indigenous communities. Bhil women performed Ghoomar during religious ceremonies and festive occasions as an expression of joy and devotion.

Over time, the dance was adopted by the Rajput royal families, particularly during the rule of the Kachwaha dynasty, and became an important part of palace celebrations. The name "Ghoomar" comes from the Hindi word ghoomna, meaning "to spin", reflecting the dance's signature circular movements.

A distinctive feature of Ghoomar is that women traditionally perform it with their faces partially covered by a ghoonghat (veil). This custom symbolises modesty, dignity and respect, values deeply rooted in Rajput culture. The dance is performed in colourful ghagras adorned with gota-patti, mirror work and traditional jewellery, making every performance visually captivating.

Accompanied by folk songs and rhythmic beats of traditional instruments, Ghoomar is an integral part of festivals such as Teej, Gangaur and weddings. Today, it is recognised worldwide as a vibrant symbol of Rajasthan's cultural identity, preserving centuries-old traditions while captivating audiences across generations.

Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com, Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary